पुनर्जागरण

प्राचीनकालीन यूरोप (प्रारंभ से 565 ई. तक)

- विश्व की सभी प्राचीन सभ्यताओं मिस्र, मेसोपोटामिया, सुमेरिया, बेबीलोन, चीन, सिंध्धु घाटी, यूनानी व रोमन सभ्यता की उत्पत्ति करीब-करीब एक साथ ही मानी जाती है। इनका विनाश भी लगभग एक समय में ही हो गया था। इन सभ्यताओं में **रोमन एवं यूनानी सभ्यताओं का विशेष स्थान** है, क्योंकि इन दोनों सभ्यताओं के अंश ही **आधुनिक यूरोपियन इतिहास की आधाारशिला** बनते हैं। ये दोनों सभ्यताऐं यूरोपीय इतिहास के तीन युगों को परिभाषित करती है-

प्राचीन यूरोप	मध्यकालीन यूरोप	आधुनिक यूरोप
प्रारम्भ से 565 AD	565 AD – 1453 AD	1453 AD के बाद
प्राचीन रोमन/यूनानी युग	मध्ययुगीन, सामंतवादी, अंधकार का युग	पुनर्जागरण–कालीन युग

रोमन साम्राज्य

- भारत में जब महाजनपद काल, जैन धर्म, बौद्ध धार्म, हर्यक वंश, नाग वंश, नंद वंश के बाद मौर्य शासकों द्वारा विशाल अखण्ड भारत का निर्माण किया जा रहा था। उसी समय तीन महाद्वीपों में फैला (735 ई. से 565 ई. तक) विशाल रोमन साम्राज्य (रोमन सभ्यता) जो रोम, इटली, पुर्तगाल, स्पेन, फ्रांस, इंग्लैण्ड, जर्मनी, बेल्जियम, हॉलैण्ड, ऑस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, स्विटजरलैण्ड, हंगरी, रूमानिया, बुल्गारिया, अल्बानिया, यूगोस्लाविया, टर्की, कुस्तुनतुनिया, सिकन्दरिया, ट्यूनिस, यूनान, क्रीट, जार्जिया, आर्मिनिया, सीरिया, एसीरिया, फीलिस्तीन, मिस्र, लिबिया, और अल्जीरिया शामिल थे। अपने विकास के चर्मोत्कर्ष पर था। जो कार्य अमेरिका व इंग्लैण्ड ने 20वीं शताब्दी में किया वो विकास कार्य रोमनों ने ईसा पूर्व में ही कर लिया था।
- जहाँ धार्म, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, तर्क, स्वतंत्र चिंतन व स्वतंत्र व्यापार वाणिज्य, कला-साहित्य, विशाल भवन निर्माण कला, व्यवस्थित शिक्षा प्रणाली विकसित थी।
- मानव जीवन सुखी-समृद्ध व गौरवशाली था। यूरोपीय इतिहास का यह युग गौरव का युग कहलाता है।

- **सामाजिक जीवन :-** संयुक्त परिवार प्रथा विद्यमान थी, महिलाओं की स्थिति अच्छी थी, उच्च शिक्षा का प्रचलन था। लैटिन भाषा निर्विवाद थी। कुछ क्षेत्रों में यूनानी भाषा थी। इसलिए रोम पर यूनानी संस्कृति का भी प्रभाव था। रोमन समाज में दास प्रथा विद्यमान थी। दासों की बाजार में बिक्री होती थी। यह रोमन समाज पर कंलक था। रोमन लोग मनोरंजन भरपूर मात्रा में करते थे। 365 वार्षिक दिनों में 135 दिन उत्सवों में गुजारते थे।
- **धार्मिक जीवन :-** धर्म की दृष्टि से रोमन समाज में प्राकृतिक शक्तियों की पूजा प्रचलित थी। प्रारम्भ में देवताओं के नाम और काम भी नहीं थे। बाद में बृहस्पति (जुपिटर) का 509 BC के आस-पास मंदिर बना और वह रोम का प्रधान देवता बन गया। यह आकाश देवता भी कहलाता था (इसकी तुलना भारतीय देवता इन्द्र से की जा सकती है।) वैदिककालीन भारतीय देवताओं व रोम के देवताओं के नाम एक समान मिलते हैं। जैसे-बृहस्पति, मंगल, सरस्वती आदि।
- **राजनीतिक जीवन :-** यूनानी प्रभाव था, प्रारम्भ में राजतंत्र था। राजा सम्पूर्ण प्रजा का पितातुल्य था। 600 BC के आस-पास रोम में गणतंत्र स्थापित हो गया। प्रथम शताब्दी के अंत तक यूनानी साम्राज्य रोमन साम्राज्य में मिल गया। इस युग में प्रसिद्ध रोमन सम्राट टाइबेरियन, पौम्पई, जूलियस सीजर, रानी क्लियोपेट्रा, सम्राट आगस्टस, टाइबीरियस, नीरो, कॉस्टेन्टाइन, सम्राट थियोडोसियस आदि हुए।
- **आर्थिक जीवन :-** विशाल व्यापारिक साम्राज्य था। दीनार (Denarius) रोम की मुद्रा कहलाती थी। भारत के साथ अच्छे व्यापारिक संबंध थे।
- **प्रसिद्ध दार्शनिक :-** प्रसिद्ध दार्शनिकों में-लुकेशियस, सिसरो, सेनेका, संत ऑगस्टीन। यूनानी दार्शनिकों में सुकरात, प्लेटो अरस्तु महान थे।
- **प्रसिद्ध साहित्यकार :-** प्रसिद्ध साहित्यकारों में सीजर, लीवी, हॉरेस, वर्जिल तथा महान वैज्ञानिक प्लिनी।
- **भाषा :-** इस युग की भाषा लैटिन थी। जो समस्त यूरोपीय भाषाओं की जननी थी। जैसे भारत में संस्कृत।

रोमन सभ्यता (समाज) में परिवर्तन कहाँ से और कैसे हुआ?

- सबसे पहले रोम में 'यहूदी धर्म' ने प्रवेश किया और ये यहूदी ईसाईयों के परम्परागत विरोधी थे। ईसाई धर्म भी लगभग 250 AD के आस-पास रोमन संस्कृति में घुल-मिल गया और 312 AD के आस-पास रोमन सम्राट कान्स्टेन्टाइन प्रथम ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया। कान्स्टेन्टाइन प्रथम ने ही पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधाानी 'कुस्तुनतुनिया' शहर का निर्माण करवाया था। चौथी शताब्दी के अंत में सम्राट थियोडोसियस प्रथम ने रोमन साम्राज्य में ईसाई धार्म को राजधर्म घोषित कर दिया और रोम के परम्परागत धर्म पर प्रतिबंध लगा दिया। देवताओं के मंदिर बंद कर दिये और समस्त प्रजा को ईसाई धर्म ग्रहण करने का आदेश दे दिया।

- पांचवी शताब्दी के अंत तक रोमन सम्राट कमजोर पड़ने लगे और पूरे साम्राज्य में पोप, चर्च, पादरी, सामंतों का गठजोड़ हो गया। सम्पूर्ण रोमन जनता पर पोप की पोप लीला, पाखण्ड, ढोंग विद्या इतनी हावी हो गई की रोमन सम्राट पोप के भय से डरने लगे, पोप सम्राटों को दण्डित करने लगा। प्राचीन रोमन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक राजनैतिक जीवन तथा धर्म, दर्शन, कला विज्ञान, साहित्य सबके सब नष्ट होते चले गये। सब कुछ पोपमय हो गया और अखण्ड साम्राज्य का विभाजन हो गया।
- पाचंवी शताब्दी से पन्द्रहवी शताब्दी तक यूरोपीय समाज अंधकार में ही जी रहा था। तीसरी शताब्दी के बाद अखण्ड रोमन साम्राज्य दो भागों में विभाजित हो गया और धीरे–धीरे गौरवमयी युग पतन की ओर अग्रसर हो गया। मनुष्य जीवन अंधकारमय हो गया।

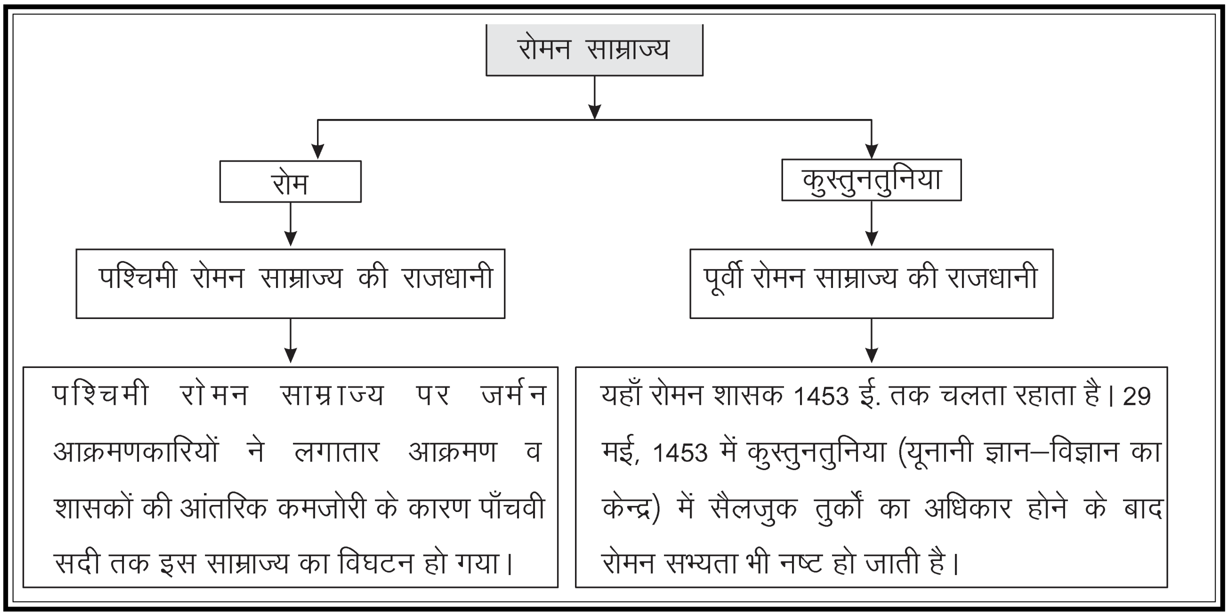

मध्यकालीन यूरोप (565 ई.-1453 ई.)

(565 AD - 1453 AD) **मध्यकालीन यूरोप अंधकार के माया जाल में कैसे जकड़ा। इस युग को अंधकार का युग क्यों कहते हैं ?**

- रोमन साम्राज्य (735 B.C - 565 AD) के पतन के बाद सम्पूर्ण यूरोपवासी पोप व चर्च के आडम्बर पूर्ण, कर्मकाण्डीय जीवन, कुरीतियों अंधविश्वासों में जकड़ गये। चर्च व सामंतों के अत्याचार में मानव बुद्धि को भ्रमित व दिशाहीन कर दिया। परिणाम स्वरूप यूरोपवासी प्राचीन यूनानी व रोमन ज्ञान-विज्ञान, धर्म-दर्शन, कला-साहित्य, स्वतंत्र चिंतन, मानववाद, बौद्धिक चेतना की अभिव्यक्ति को भूल गये और लम्बे समय तक अंधकारमय, दिशाहीन, नारकीय, पशु-जीवन जीने के लिए बाध्य हो गये। स्वतंत्र रूप से पेशाब करना भी प्रतिबंधित था। जहाँ ना ही तर्क था, ना ही नवीन विचार थे, ना ही किसी भी प्रकार की सोचने की आजादी थी।
- मानवीय चिंतन शक्ति तथा बौद्धिक चेतना का पतन हो गया। मनुष्य जन्म पाप माना जाने लगा और मृत्यु-पर्यत परलोक की चिंता रहती थी। जनता यही जानती थी की जमीन-आकाश, हवा-पानी, जीव-जंतुओं का सांस लेना, सूर्य की रोशनी चन्द्रमा की शीतलता, दिन-रात का बनना, ऋतुओं का चक्र सब पोप के नियंत्रण में है और पोप द्वारा ही संचालित है।
- इस युग के लोगों में ईश्वर, चर्च और धार्म के प्रति इतनी गहरी आस्था बढ़ गई की लैटिन भाषा में लिखित धार्मशास्त्रों में जो कुछ सच्चा-झूठा लिखा हुआ था। उसे ही पूर्ण सत्य मानना पड़ता था।
- दूसरी शताब्दी में मिस्र के यूनानी खगोलशास्त्री टालेमी ने यह मत प्रतिपादित किया था कि "हमारी पृथ्वी ब्रह्माण्ड के बीचों बीच स्थित है और यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का स्थिर केन्द्र है। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र तथा अन्य ग्रह पृथ्वी की परिक्रमा करते हैं।"
- पोप व चर्च टालेमी की बात को सही मानते रहे। यदि कोई दूसरा इस बात को गलत बताता तो जिंदा जला दिया जाता था। विरोध करने पर मृत्यु दण्ड दिया जाता था। मध्यकालीन यूरोपियन इतिहास के इस युग को अंधकार का युग कहते हैं।

आधुनिक कालीन यूरोप (1453 ई. से वर्तमान तक)

❖ अर्थ :

- पुनर्जागरण फ्रेंच भाषा का शब्द **Renaissance (रेनेसाँ)** है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- "**फिर से जागना।**" इसे 'नया जन्म' अथवा 'पुनर्जन्म' भी कह सकते हैं। व्यावहारिक दृष्टि से इसे मानव समाज की बौद्धिक चेतना और तर्कशक्ति को पुनर्जन्म कहा जाता है।

- चौदहवीं शताब्दी से लेकर सत्रहवीं शताब्दी के मध्य तक यूरोप के सांस्कृतिक क्षेत्र में जो आश्चर्यजनक प्रगति हुई, जीवन मूल्यों में परिवर्तन आए, लोगों की प्राचीन यूनान व रोमन साहित्य में रूचि बढ़ी, स्वतंत्र चिंतन, जिज्ञासा, अन्वेषण, साहस तथा वैज्ञानिक चेतना, भौगोलिक खोजों से नवीन विचारधाराएँ प्रस्फुटित हुई, धार्मिक जीवन के स्थान पर वैज्ञानिक तर्क शक्ति ने स्थान बना लिया। उसे ही 'पुनर्जागरण' के नाम से पुकारा जाता है।

❖ नवीन मधयमवर्ग का उदय:

- मधययुग के अन्त में लोग मेनर (जागीर) से अपना सम्बन्ध तोड़कर कृषि फार्मो पर स्वतंत्र रूप से मजदूरी करने लगे या गाँवों में जाकर मनपसंद काम करने लगें तथा गाँवों में अपनी स्वयं की दुकानें खोलने लगे, इन्हीं लोगों से एक नवीन 'मधयम वर्ग' का उदय हुआ। अब प्राचीन ग्रन्थों के अध्ययन-अध्यापन से पुन: नयी आस्था का जन्म हुआ। चर्च तथा धर्मशास्त्रों की पाखण्ड व झूठी बातों पर संदेह किया जाने लगा। परिणामस्वरूप धर्म एवं दर्शन, कला, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य एवं जीवन के सभी दृष्टिकोणों में महान् परिवर्तन आ गये। इस सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तन को ही इतिहास में 'पुनर्जागरण' की संज्ञा दी गई है।
- **जूल्स मिशिलेट** - इन्होंने पुनर्जागरण की व्याख्या करते हुए दो ऐसे व्यापक आयामों की ओर संकेत किया है, जिनमें पुनर्जागरण के सुधारवादी समग्र प्रयत्न आ जाते हैं। ये दो आयाम- **"दुनिया की खोज" और "मनुष्य की खोज"** है।
- **दुनिया की खोज** - यह खोज 15वीं एवं 16वीं ष्टाताब्दी की उन भौगोलिक उपलब्धियों से है, जिन्होंने अटलांटिक, प्रशान्त एवं हिन्द महासागर को व्यापार के लिए खोला और पुरानी दुनिया के लोगों को अमेरिका की नई दुनिया, दक्षिणी अफ्रीका और आस्ट्रेलिया का परिचय कराया।
- **मनुष्य की खोज** - इसमें मानव शक्ति का वह पक्ष, जिसके द्वारा उसने मध्यकालीन पोपशाही को अस्वीकार किया तथा विकसित एवं स्वतंत्र दृष्टि का अवलम्बन किया।

- **फिशर**- मानवतावादी आन्दोलन का आरम्भ, धर्म के क्षेत्र में नवीन दृष्टिकोण, स्थापत्य एवं चित्रकला का नया स्वरूप, व्यक्तिवादी सिद्धान्तों का विकास, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और छापेखाने का आविष्कार इत्यादि विशेषताओं को सामूहिक रूप में 'सांस्कृतिक नवजागरण' कहते हैं।
- **हेनरी**- पुनर्जागरण शब्द का अर्थ सभ्यता के पुनर्जीवन से नहीं है अपितु इसका अर्थ इटली के उन सांस्कृतिक परिवर्तनों से है, जो 1300 ई. के बाद इटली में विकसित हुए तथा 1600 ई. के पूर्व यूरोप के अन्य भागों में फैले।
- **सीमोण्ड**- यह एक आन्दोलन था, जिसके द्वारा पश्चिम के राष्ट्र मध्ययुग से निकलकर आधुनिक विचार तथा जीवन की पद्धतियों को ग्रहण करने लगे।
- **हेज**- पुनर्जागरण शब्द, जिसका शाब्दिक अर्थ पुनर्जन्म है, का प्रयोग, दुर्भाग्यवश मध्यकाल के आधुनिक में परिवर्तित होने की सम्पूर्ण अवधि के लिए किया जाने लगा, जबकि इस काल में आरम्भिक आधुनिक यूरोप की राजनीति, अर्थशास्त्र तथा वैज्ञानिक सम्भावनाओं पर बल देने वाली कला एवं ज्ञान के शास्त्रीय रूप को ही पुनर्जन्म मिला था। किन्तु पूर्णतः ऐसा भी नहीं था।
- **हेनरी एस. लुक्स**- पुनर्जागरण से तात्पर्य मध्यकालीन विचारों के तरीकों में परिवर्तन से है।
- **वैसारी**- सर्वप्रथम इटली के लेखक वैसारी ने 16वीं शताब्दी में भवन निर्माण कला, मूर्तिकला आदि में क्रांन्तिकारी परिवर्तनों को 'रिनेसां' शब्द से सम्बोधित किया।
- **दीदेरों**- 18वीं शताब्दी में फ्रंस के विद्वान दीदेरों ने 'एनसाइक्लोपीडिया' में तत्कालीन विश्व में नवसृजित कला तथा साहित्य के लिए 'रिनेसां' शब्द का प्रयोग किया था।
- **डेविस**- पुनर्जागरण मानव के स्वातन्त्र्यप्रिय साहसी विचारों को, जो मध्ययुग में धर्माधिकारियों द्वारा जकड़े व बन्दी बना दिये गये थे, व्यक्त करता है।
- **पं. नेहरू**- पुनर्जागरण का अर्थ है विद्या का पुनर्जन्म, कला, विज्ञान, साहित्य एवं यूरोप की भाषाओं का विकास।
- **प्रो. ल्यूकस**- 14 वीं और 17 वीं शताब्दियों के बीच यूरोप में होने वाले महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक परिवर्तनों को 'पुनर्जागरण' कहते हैं।

- **जैकब बुर्कहार्ट** – स्विस इतिहासकार जैकब बुर्कहार्ट की कृति 'सिविलाइजेशन आफॅ द रिनेसाँ इन इटली' के प्रकाशन (1860) के साथ यह मान्यता थी कि पुनर्जागरण एक लम्बी ''नैतिक एवं बौद्धिक जड़ता'' के बाद अस्तित्व में आया था और मानव चेतना के क्षेत्र में एक बड़ा कदम था। परन्तु अब बुर्कहार्ट की मान्यता के विपरीत यह मत स्वीकार किया जाने लगा है कि पुनर्जागरण एक पूर्णत: नए ऐतिहासिक आन्दोलन की बजाय तत्कालीन मानसिक स्थिति को कहीं ज्यादा व्यक्त करता है।

क्या पुनर्जागरण मानसिक आंदोलन था?

- जी हाँ चर्च के प्रभुत्व को चुनौती, सामंतवाद का पतन, राष्ट्रीय राज्यों का उदय, भौगोलिक खोजे, बारूद कुतुबनुमा का आविष्कार, पूंजीवाद का विकास, बौद्धिक जागृति तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रदर्शित करता है। इसलिए इसे एक 'मानसिक आंदोलन' भी कहा जाता है।

पुनर्जागरण का स्वरूप/विशेषताएँ/प्रकृति

1. **तर्कशक्ति का विकास**–धार्मिक आस्था के स्थान पर स्वतंत्र चिन्तन को प्रतिष्ठित करके तर्क शक्ति का विकास करना था।
2. **मानववाद का विकास**–धर्म और मोक्ष के स्थान पर मानव जीवन को और अधिक सुखी एवं समृद्ध बनाने की शुरूआत। मानवतावाद मानव को केन्द्र में रखते हुए उसे व्यापक जीवन संदर्भों में स्थापित करने वाली एक विचारधारा का नाम है। इस विचारधारा में मानव का, मानव के द्वारा एवं मानव के लिए कार्य करना है।
3. **व्यवहारिकता पर बल**–पारलौकिक कल्पना के स्थान पर यथार्थवादी संसार की समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित किया। व्यवहारिक जीवन संबंधी सभी विषयों पर गहन-चिंतन मनन किया गया।
4. **सौन्दर्य की उपासना**–रूढ़िवादिता के स्थान पर तर्क एवं बौद्धिकता को महत्त्व दिया जाने लगा साथ ही साथ सहज और सौन्दर्यता की उपासना पर विशेष बल दिया गया।
5. **आधुनिक शिक्षा**– देशज भाषाओं का विकास। अब बोलचाल की भाषा को गरिमा व सम्मान मिला। पहले यूनानी व लैटिन भाषा सामान्य लोगों को समझ में नहीं आती थी। देशज भाषाओं में व्याकरण, कविता, गीत, इतिहास, दर्शन, विज्ञान। विश्वविद्यालयों की स्थापना की जाने लगी। जिससे आधुनिक शिक्षा पद्धति विकसित हुई।

6. **धर्म निरपेक्ष जीवन पर बल**–धार्मिक आडम्बरो, अंधविश्वासों को दूर करना तथा मनुष्य जीवन को धर्म के नियंत्रण से मुक्त सांसारिक जीवन पर बल देना।

7. **छापाखाना का जन्म**–1460 में गुटनबर्ग ने प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किया। कागज, छापाखाना, तकनीकी आदि से बाईबिल का देशज भाषाओं में अनुवाद किया गया, जिससे सर्वसाधारण को सरल भाषा में बाईबिल पढ़ने का अवसर मिला।

8. **साहित्य का विकास**–मध्यकाल में साहित्य की भाषा लैटिन थी जो सामान्य व्यक्ति के लिए कठिन थी। पुनर्जागरणकाल में बोलचाल की दो भाषाओं का विकास हुआ रोमन्स भाषा जिसमें इटालियन, फ्रेंच, पुर्तगाली तथा स्पेनिश, जर्मनिक भाषा जिसमें जर्मन अंग्रेजी, डच, स्विडिश मुख्य थी।

9. **चित्रकला का विकास**–मध्ययुग में कला का अपना स्वतंत्र एवं पृथक स्थान नहीं था। वह धर्म के साथ जुड़ी हुई थी। पुनर्जागरणकाल में चित्रकाल की मुख्य विशेषता थी – यथार्थ का चित्रण, वास्तविक सौन्दर्य का अंकन।

10. **विज्ञान का विकास**–मध्य युग में मानव जीवन अंधकारमय था वास्तविकता की खोज में कोई रूचि नहीं थी। पुनर्जागरणकाल में विज्ञान के क्षेत्र में निरीक्षण, अन्वेषण, जाँच और परीक्षण मुख्य विशेषता हो गई। मानववादी विचाराधारा ने मनुष्य को प्रकृति के सभी रहस्यों को खोजने की प्रेरणा दी थी

पुनर्जागरण के कारण

- अनेक घटनाओं के घात-प्रतिघात पुनर्जागरण के रूप में उद्घाटित हुए। ये घटनाएँ एक ही देश की अथवा एक ही समय की उपज नहीं थीं। वस्तुत: इन घटनाओं का प्रादुर्भाव समय-समय पर विभिन्न देशों में हुआ, जिन्होंने धीरे-धीरे पुनर्जागरण की पृष्ठभूमि का निर्माण किया। अत: पुनर्जागरण अकस्मात् न होकर घटनाओं के एकजुट हो जाने पर हुआ।

पुनर्जागरण के निम्नलिखित कारण है-			
1.	धर्मयुद्ध	6.	वैज्ञानिक चेतना
2.	व्यापारिक समृद्धि	7.	स्कालिष्टिक (पण्डितवाद, विद्वतावाद) विचारधारा
3.	कागज एवं मुद्रण यंत्र		
4.	कुस्तुन्तुनिया पर तुर्कों का अधिकार	8.	सामंतवाद का पतन
5.	मंगोल साम्राज्य का उदय	9.	मानवादी विचाराधारा

1. धर्मयुद्ध :

- 11वीं शताब्दी के अन्तिम दशक से 13वीं शताब्दी के अन्त तक यूरोप में ईसाई धर्म के पवित्र तीर्थ स्थल **'जेरूसलम'** को लेकर मुसलमानों (सैल्जुक तुर्कों) के बीच हुए युद्धों को 'धर्मयुद्ध (क्रूसेड)' की संज्ञा दी गई है।
- इन धर्मयुद्धों के कारण यूरोपवासियों का पूर्व के लोगों के साथ सम्पर्क हुआ, जो ज्ञान के प्रकाश से आलोकित थे। पूर्वी देशों में अरब लोगों ने **'यूनान' तथा 'भारतीय सभ्यताओं'** के सम्पर्क से अपनी एक समृद्ध सभ्यता को विकसित कर लिया था।
- धर्मयुद्धों ने यात्राओं तथा भौगोलिक अध्ययन को प्रोत्साहन दिया।
- धर्म युद्धों में भाग लेने वाले व्यक्ति नये लोगों से मिले और उन्होंने उनसे नये विचार ग्रहण किये। जो लोग धर्मयुद्धों से लौटे, उनका बौद्धिक क्षितिज अधिक विशद् हो गया और उन्हें अपने सीमित जीवन से अरुचि हो गयी।
- मध्ययुग में सामान्यत: लोगों को यह विश्वास था कि **''व्यक्ति के इहलौकिक तथा पारलौकिक जीवन की जितनी आवश्यकताएँ हैं, वे सब चर्च तथा ईसाई धर्म के द्वारा पूर्ण हो सकती हैं।''**
- एक दूसरी सभ्यता के सम्पर्क से **'नवीन अनुभव'** प्राप्त करके लौटने वाले लोगों ने इस विश्वास का खण्डन किया और लोगों के मस्तिष्क पर चर्च का जो अत्यधिक प्रभाव था, वह निर्बल पड़ने लगा।
- धर्मयुद्ध यूरोप के अलगाव की समाप्ति में सहायक सिद्ध हुए। **'अरस्तु'** के वैज्ञानिक ग्रंथ, अरबी अंक, बीजगणित, दिग्दर्शक यंत्र और कागज, पश्चिम यूरोप में धर्मयुद्धों के माध्यम से ही पहुँचे।
- इस प्रकार इन धर्मयुद्धों ने **'नवीन विचारों का प्रसार'** करके तथा पुराने विचारों, विश्वासों एवं संस्थाओं को क्षति पहुँचाकर महत्त्वपूर्ण कार्य किया और उसी के फलस्वरूप पुनर्जागरण सम्भव हो सका।

2. व्यापारिक समृद्धि :

- पुनर्जागरण का एक मुख्य कारण 'व्यापार का उदय' था। मानव इतिहास में सभ्यताओं एवं संस्कृति का पल्लवन सदैव ही समृद्धि के द्वारा ही सम्भव हुआ। धर्मयुद्धों के कारण यूरोप के पूर्वी देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हुए।
- कई यूरोपीय व्यापारी **'जेरूसलम' एवं 'एशिया माइनर'** के तटों पर बस चुके थे। परिणामस्वरूप व्यापार में काफी वृद्धि हुई, जिसने पुनर्जागरण की भावना के उदय में सहायता पहुँचाई।

व्यापारिक समृद्धि ने पुनर्जागरण में निम्न प्रकार से सहयोग दिया-	
1.	यूरोपीय व्यापारी व्यापार के सिलसिले में विभिन्न देशों में पहुँचे, जहाँ वे नये विचारों तथा प्रगतिशील तत्त्वों से परिचित हुए। जब वे अपने देश वापस लौटे, तब वे नये विचारों को अपने साथ ले गए।
2.	व्यापार के विकास ने नये नगरों, जैसे वेनिस, मिलान, फ्लोरेंस, आंग्लबर्ग, नूरेमबर्ग आदि को जन्म दिया, जिन्होंने मनुष्य के जीवन को प्रभावित किया।
3.	'यूरोप के नगर' अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के केन्द्र बनने लगे, जिससे वहाँ निरन्तर विभिन्न देशों के व्यापारियों एवं यात्रियों का आना-जाना बना रहा। इसके कारण विचारों का आदान-प्रदान सम्भव हुआ और ज्ञान के विकास में सहायता मिली।
4.	इन नगरों के स्वतंत्र वातावरण ने 'विचार स्वातन्त्र्य' को प्रोत्साहन दिया तथा तत्कालीन संस्थाओं एवं चर्च के प्रति शंका को जन्म दिया। इसी भावना से पुनर्जागरण के विकास को गति प्रदान की।
5.	व्यापार के अत्यधिक विकास से व्यापारियों के पास अत्यधिक धन संग्रहित हो गया। जिससे उन्हें 'विद्यार्जन' का अवसर मिला। मध्ययुग में केवल पादरियों को ही इसका अवसर मिलता था लेकिन अब यह जनसाधारण को भी सुलभ हुआ।
6.	व्यापारी वर्ग के लोगों को उस समय के प्रसिद्ध पुस्तकालयों, जैसे-बगदाद, काहिरा, कोरडोवा आदि में संचित ज्ञान के सम्पर्क में आने का मौका मिला।
7.	विपुल धन होने के कारण नगरों के बड़े-बड़े व्यापारी 'कला' के पोषक बने। साथ ही उन्होंने विद्वानों को आश्रय दिया, जिससे 'साहित्य' के क्षेत्र में उच्च कोटि का सृजन एवं 'विज्ञान' के क्षेत्र में अन्वेषण का सिलसिला आरम्भ हुआ।
8.	व्यापारी वर्ग ने चर्च की कड़ी आलोचना करके उसके महत्त्व को कम करने की कोशिश की। चर्च सूद लेने को पाप मानता था। अतः व्यापारियों ने इसका विरोध किया।

3. कागज एवं मुद्रण प्रणाली :

- मध्ययुग में 'अरबों' के माध्यम से यूरोपवासियों ने 'कागज बनाने की कला' सीखी।
- 15वीं शताब्दी के मध्य में जर्मनी के 'जोहन्नेस गुटेनबर्ग' (1460 ई.) ने एक ऐसी 'टाइप मशीन' का आविष्कार किया, जो आधुनिक 'प्रेस की पूर्ववर्ती' कही जा सकती है।
- मुद्रण यंत्र के इस आविष्कार ने बौद्धिक विकास का मार्ग प्रशस्त दिया।
- **कैक्सटन ने 1477 ई. में ब्रिटेन में 'छापाखाना' स्थापित** किया।

- इसके बाद इटली, जर्मनी, स्पेन, फ्रांस आदि देशों में भी मुद्रण यंत्र का प्रयोग होने लगा। कागज और मुद्रण यंत्र के आविष्कार से अधिक और अपेक्षाकृत कम महँगी पुस्तकें छपने लगीं।
- 15वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में यूरोप भर में लगभग एक लाख हस्तलिखित पुस्तकें उपलब्ध थीं।
- **'मुद्रण'** का आविष्कार होने के 50 वर्षों के अन्दर ही पुस्तकों की संख्या बढ़कर नब्बे लाख हो गई। जब पहली बार 'इरैस्मस' की पुस्तक छपी, तो उसकी करीब 2,500 प्रतियाँ बिकी।
- **'छापेखाने'** के आविष्कार ने समाज के प्रत्येक व्यक्ति की 'बौद्धिक क्षुधा' को शान्त करने का मार्ग प्रशस्त किया।
- अब लोगों में साक्षरता की इच्छा के साथ-साथ 'सांस्कृतिक जागरण' की भावना को बल मिला।
- छापेखाने के आविष्कार के कारण ही दबे हुए लोगों को अपने अधिकारों का ज्ञान हुआ।
- **'मुद्रित'** पुस्तकों की द्रुत गति के वितरण के साथ नये विश्व की खोज ने यूरोपवासियों को, बेकन के उदार कथन ''सत्य सत्ता की नहीं, वरन् समय की पुत्री है, की शिक्षा दी।''
- समय के साथ सत्य उद्घाटित होता चला गया। जैसे-जैसे वैज्ञानिक विकास एवं ज्ञान में वृद्धि हुई, यूरोपीय समाज ने अंधविश्वास के रास्ते का त्याग कर 'तर्क' के मार्ग प्रशस्त हुआ।
- इस प्रकार **'कागज' एवं 'मुद्रण यंत्र'** ने पुनर्जागरण में आग में घी का कार्य किया।
- **विल ड्यूरां ने 'लेखन कला'** के पश्चात् 'मुद्रण-कला' को ही **'इतिहास का सबसे बड़ा आविष्कार'** माना है, जिसने बौद्धिक चेतना का सर्वाधिक विकास किया।

4. कुस्तुन्तुनिया पर तुर्कों का अधिकार :

- 1453 ई. में 'तुर्कों' ने पूर्वी रोमन या 'बाइजेन्टाइन' साम्राज्य की राजधानी 'कुस्तुनतुनिया' पर अधिकार कर लिया।
- इससे पूर्वी रोमन साम्राज्य का सदैव के लिए पतन हो गया, किन्तु इसके फलस्वरूप पश्चिमी यूरोप में जो ज्ञानोदय हुआ, उसके प्रभाव एवं प्रसार ने नवयुग के आगमन की सूचना दी।

तुर्कों द्वारा कुस्तुन्तुनिया पर अधिकार, अत्याचारों और पूर्वी रोमन साम्राज्य को खत्म कर देने से निम्न महत्त्वपूर्ण परिणाम सामने आए-	
1.	कुस्तुन्तुनिया पर तुर्कों का अधिकार हो जाने से यूरोप से पूर्वी देशों को जाने वाले स्थल मार्ग पर अब तुर्कों का अधिकार हो गया। चूँकि तुर्क लोग व्यापारियों को लूट लिया करते थे, अत: यूरोप का पूर्वी देशों के साथ व्यापार बंद हो गया।
2.	यूरोप में पूर्वी देशों की विलासिता की सामग्री तथा गर्म मसालों की जबरदस्त माँग थी। अत: दक्षिण पश्चिम यूरोप के लोग किसी नए व्यापार-मार्ग, सम्भवत: जल मार्ग, खोज निकालने के लिए व्यग्र हो उठे। इस व्यग्रता ने ही अमेरिका की खोज की, भारत एवं पूर्वी द्वीपों का जल मार्ग ढूँढ निकाला।
3.	'कुस्तुन्तुनिया' पिछले दो सौ वर्षों से ज्ञान, दर्शन तथा कला का महान् केन्द्र था। इस्लाम में नव दीक्षित तथा बर्बर तुर्कों के लिये इनकी न कोई उपयोगिता थी और न महत्त्व। जिसके फलस्वरूप यहाँ से आजीविका की खोज में हजारों यूनानी विद्वान, दार्शनिक एवं कलाकार इटली, फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैण्ड आदि देशों में चले गये। वे जाते समय प्राचीन रोम एवं यूनान का ज्ञान-विज्ञान तथ नयी चिंतन पद्धति अपने साथ ले गये। अकेला 'कार्डिनल बेसारिओन' 800 पांडुलिपियों के साथ इटली पहुँचा था।

5. मंगोल साम्राज्य का उदय :

- 13वीं शताब्दी में मध्य एशिया विजेता 'चंगेज खाँ' की मृत्यु के बाद 'कुबलाई खाँ' ने एक विशाल एवं शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की थी। इस साम्राज्य में रूस, पोलैण्ड, हंगरी आदि प्रदेश शामिल थे। भारत में चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य व अकबर के दरबार में धर्म-दर्शन, ज्ञान-विज्ञान से संबंधित नवरत्न रहते थे।
- उसी तरह उनके दरबार में समस्त विश्व के विद्वानों, दार्शनिकों, कलाकारों, इंजीनियरों का ज्ञान-विज्ञान व ज्योतिष भरा पड़ा था।
- इस समय 'पीकिंग (केम्बुल)' एवं 'समरकन्द अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र' बन गये थे। अत: इस युग में पूर्व एवं पश्चिम का वास्तविक सम्पर्क स्थापित हुआ। सम्पर्क, विचार विनिमय और ज्ञान के आदान-प्रदान का यूरोप के लोगों पर काफी प्रभाव पड़ा। 1272 ई. में प्रसिद्ध वेनिस यात्री 'मार्कोपोलो', कुबलाई खाँ के दरबार में गया था। मार्कोपोलो के यात्रा विवरण ने यूरोपवासियों के मानस को लम्बे समय तक उद्वेलित किया।
- मंगोलों के सम्पर्क से यूरोप को कागज एवं मुद्रण, कुतुबनुमा तथा बारूद की सर्वप्रथम जानकारी मिली। मंगोलों का यूरोपियनों को सभ्य बनाने में बड़ा योगदान है। उक्त कारणों से यूरोप में पुनर्जागरण को बल मिला।

6. वैज्ञानिक चेतना :

- इंग्लैण्ड के वैज्ञानिक रोजन बेकन ने वैज्ञानिक चेतना जागृत करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। कोपरनिकस, ब्रूनो, गैलीलियो आदि वैज्ञानिकों ने ज्योतिष एवं खगोल के क्षेत्र में अनेक नये आविष्कार किये और मध्ययुगीन अंधविश्वास, रूढ़िवादी मान्यताओं का खण्डन किया। इन वैज्ञानिक खोजों के कारण मनुष्य को वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- उसका विश्वास परम्परागत रूढ़ियों तथा अन्धविश्वासों से हटने लगा। वैज्ञानिक खोजों के कारण मनुष्य का झुकाव तर्क, चिंतन, प्रयोग, अनुसंधान की ओर होने लगा। इससे भी पुनर्जागरण को प्रोत्साहन मिला।

7. स्कालिष्टिक (पाण्डितवाद्, विद्धतावाद्) विचारधारा

- मध्ययुग में यूरोप में स्कालिष्टिक विचारधारा का उदय हुआ था। इस विचारधारा का आधार अरस्तू का तर्कशास्त्र तथा सन्त आगस्टाइन के तत्वज्ञान का प्रभाव था। इसमें धार्मिक विश्वास तथा तर्क दोनों का समन्वय था। विश्वविद्यालयों ने इस विचारधारा के आन्दोलन को तेजी से आगे बढ़ाया। इससे शिक्षा तथा वाद-विवाद को खूब प्रोत्साहन मिला। इस विचारधारा से स्वतंत्र चिन्तन तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बल मिला।

8. सामंतवाद का पतन :

- मध्य युग में राज्य का विकास व राष्ट्रीयता की भावना नहीं थी। सामंत लोग जनता का शोषण करते थे। पुनर्जागरण काल में स्वतंत्र राष्ट्रीय राज्यों की उत्त्पत्ति, सामंतों का पतन, व्यापार-वाणिज्य, पूंजीवाद, औद्योगिक क्रांति व कला विज्ञान साहित्य का विकास हुआ।

9. मानववादी विचारधारा :

- मानवतावाद मानव को केन्द्र में रखते हुए उसे व्यापक जीवन संदर्भो में स्थापित करने वाली एक विचारधारा का नाम है। इस विचाराधारा में मानव का, मानव के द्वारा एवं मानव के लिए कार्य करना है।
- पुनर्जागरण काल में जो विद्वान मानव एवं प्रकृति की रूचियों का विवेचन करके उसमें रूचि लेने लगे थे, उन्हें **'मानववादी'** के नाम से पुकारा जाता है। उन्होंने मौजूदा संसार और उसमें रहने वाले लोगों की समस्याओं पर अपनी लेखनी उठाई थी। इटली के नगरों की आर्थिक समृद्धि और विदेशों के साथ बढ़ते हुए सम्पर्क ने मानववादी विचारधारा को जन्म दिया।

पुनर्जागरणकालीन मानववादी विचारधारा क्या थी? इसका उदय कैसे हुआ?

- मानववाद शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग जर्मन शिक्षाविद् एफ.जे.नीथ हेमर ने किया।

❖ **अर्थ :**

- इसमें अंधविश्वास व पाखण्ड के स्थान पर मानवीय जीवन सुख, समृद्ध, आनंद व भौतिकता से भूरपूर था। जीवन का उद्देश्य आनंद, हर्ष व उत्साह, उमंग, रोमांचित बन गया। यूरोपियन भौतिक जगत की वस्तुओं से प्रेम करने लगे एवं सांसारिक और प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति आकर्षित होने लगे। मानवीय सुख की लालसा बढ़ने लगी। मानववाद मानव को केन्द्र में रखते हुए उसे व्यापक जीवन संदर्भो में स्थापित करने वाली एक विचारधारा का नाम है। इस विचाराधारा में मानव का, मानव के द्वारा एवं मानव के लिए कार्य करना है।

1. **शिक्षा का प्रसार**–मानववाद अथवा मानववादी विचारधारा पुनर्जागरण का एक प्रमुख लक्षण था। शिक्षा के प्रसार के कारण इस विचारधारा का दर्शन सर्वप्रथम इटली में ही हुआ। इस विचारधारा का सीधा–सादा अर्थ है– मानव जीवन में रूचि लेना, मानव जीवन को तन से, मन से, धन से, सौन्दर्यता से सुखी, समृद्ध एवं उन्नत बना कर उसके व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करना।
2. **प्रकृति में रूचि**–पुनर्जागरण काल में जो विद्वान मानव एवं प्रकृति की रूचियों का विवेचन करके उसमें रूचि लेने लगे थे, उन्हें 'मानववादी' के नाम से पुकारा जाता है। उन्होंने मौजूदा संसार और उसमें रहने वाले लोगों की समस्याओं पर अपनी लेखनी उठाई थी। इटली के नगरों की आर्थिक समृद्धि और विदेशों के साथ बढ़ते हुए सम्पर्क ने मानववादी विचारधारा को जन्म दिया।
3. **रूढ़िवाद का पतन**–इस विचारधारा के विकास के परिणामस्वरूप मध्ययुगीन वातावरण में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आ गये। अब धार्मिक विषयों के स्थान पर इतिहास, भूगोल, विज्ञान, सौन्दर्यशास्त्र जैसे विषयों के अध्ययन पर जोर दिया जाने लगा और लेखकों ने भी मानव जीवन संबंधी प्रेम, घृणा, विरह, मिलन, दाम्पत्य जीवन, रोमांच, नारी सौन्दर्य आदि पर अपना ध्यान केन्द्रित किया।
4. **भौतिकवादी विचार**–मानववादियों का कहना था कि परलोक की चिन्ता छोड़कर इहलोक को ही स्वर्ग बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। आदर्शवाद के स्थान पर यथार्थवाद, अध्यात्मिकता के स्थान पर भौतिकवाद को महत्त्व दिया। मानववादी आन्दोलन के प्रारंभिक समर्थकों में पेट्राक का स्थान सर्वोपरि है। कुछ विद्वानों ने तो पेट्राकं को 'मानववाद का पिता' कहा है।

5. **प्रमुख विचारक**-धर्म निरपेक्षता की भावना तथा सहज सौन्दर्य की उपासना मानववाद की मुख्य विचाराधारा थी। इरैस्मस को मानवावादियों का राजा कहा जाता था। प्लूटो, अरस्तु, वर्जिल, सिसरो, बुकासियो, रयूक्लिन, मेलांकथन, टामस मूर, जान कालेट प्रमुख मानवतावादी विचारक थे।

6. **मनुष्य ही केन्द्र है**-ग्रीक वैज्ञानिक **'पाइथागोरस'** ने कहा है की संसार में मानव ही सभी वस्तुओं का मापदण्ड है। जीवन की सभी गतिविधियाँ चाहे राजनीति हो, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सबका केन्द्र बिन्दु मानव ही है।

इटली में ही पुनर्जागरण की शुरुआत क्यों हुई ?

- सर्वप्रथम पुनर्जागरण की शुरूआत इटली में हुई, इसके बाद जर्मनी, इंग्लैण्ड, फ्रांस आदि अन्य यूरोपीय राष्ट्रों में विस्तार हुआ। प्रश्न उठता है कि इटली में ही पुनर्जागरण की शुरुआत क्यों हुई ? यूरोपीय कला एवं साहित्य का ऐसे देश में पुनर्जन्म होना स्वाभाविक था, जहाँ प्राचीन महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ महीन किन्तु धुंधले रूप में नजर आ रही थीं और जहाँ ज्ञानार्जन की प्राचीन परम्परा पूर्णरूपेण अवरूद्ध नहीं हुई थी। वहाँ नये नगरों के उदय के लिए प्रतिस्पर्धा थी, कला और साहित्य को संरक्षण दे रहे थे। वहाँ के प्राचीन अवशेषों से पैट्रार्क के समय कोण को प्रोत्साहन मिला।

1.	भौगोलिक स्थिति	5.	सांस्कृतिक कारण	9.	उदारवादी समाज
2.	ऐतिहासिक कारण	6.	व्यापारिक मध्यम वर्ग का उदय	10.	लौकिक शिक्षा पर बल
3.	साहित्य, कला, विज्ञान	7.	स्थानीय भाषाओं का विकास	11.	पोप का निवास स्थल
4.	राजनैतिक कारण	8.	रोमन सभ्यता की जन्मस्थली	12.	समृद्धि

1. **भौगोलिक कारण :** भूमध्य सागर के मध्य स्थित होने के कारण इटली में व्यापार-वाणिज्य की अत्यधिक उन्नति हुई। क्योंकि नवीन जलमार्गों की खोज से पूर्व भूमध्यसागर पूर्व और पश्चिमी देशों के व्यापार का केन्द्र था। इससे वहाँ के बड़े-बड़े नगरों का तथा धनी मध्यम वर्ग का विकास शेष यूरोप से बहुत पहले हो गया।

2. **ऐतिहासिक कारणः** रोम रोमन साम्राज्य का प्रमुख केन्द्र था। जिसकी गौरवशाली परम्परा थी। कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों के अधिकार (1453 ई.) के बाद यूनानी रोम में बस गये। ईसाई धार्म का सर्वोच्च धर्मगुरू पोप रोम में निवास करता था। जो कला-साहित्य विज्ञान का संरक्षक था। पोप निकोलस पंचम ने संत पीटर का गिरजाघर, अनेक विश्वविद्यालय तथा वेटिकन पुस्तकालय का निर्माण करवाया।

3. **साहित्य, कला, विज्ञान :** प्राचीन रोम गौरव का केन्द्र एवं ऐतिहासिक स्मारकों व कला हेतु आकर्षक का केन्द्र था। अतः रोम के प्राचीन अवशेषों के केन्द्र इटली ने विद्वानों को नवीन खोज हेतु आकर्षित किया। व्यापारिक आधार पर सर्वाधिक समृद्ध नगर मिलान, नेपल्स, वेनिस, फ्लोरेंस यूनानी नगर राज्यों की तरह समृद्ध व सम्पन्न जहाँ साहित्यकारों व कलाकारों ने आश्रय पाया। दाँते, पेटार्क, राफेल, एंजिलो, बुकासियो, मैकियावेली, लियोनार्दो द विंसी प्रमुख थे।

4. **राजनैतिक कारण :** राजनीतिक स्थिति अनुकूल होने तथा अशक्त पवित्र रोमन साम्राज्य के कारण उत्तरी इटली में स्वतंत्र नगर राज्यों का विकास हो गया था। इटालियन राज पवित्र साम्राज्य के प्रभुत्व से मुक्त हो स्वतंत्र रूप से अपना विकास कर रहे थे। सामंतों से दूर यहाँ का समाज कला, विज्ञान, साहित्य में चिंतनशील था।

5. **सांस्कृतिक कारण :** इटली के नगरों में धर्म निरपेक्ष विषयों की शिक्षा के विश्वविद्यालय स्थित थे। जहाँ रोमन विधि, चिकित्सा शास्त्र की पढ़ाई होती थी। इटालियन समाज रूढ़िवादिता से दूर था। परिवर्तनशील विचारों को स्वीकार कर रहा था। इटली में धर्मनिरपेक्षता, बौद्धिकता, कलात्मक, सृजनता व लौकिक जीवन समृद्ध था तथा यूनानी भाषा के ग्रंथ स्थानीय भाषा में अनुवादित मानवीय जीवन से संबंधित उपन्यास, कहानी, नाटक, गीत प्रचलित थे। धार्मयुद्धों से लौटने वाले ईसाईयों का बड़ी संख्या में इटली में ही बस जाना। ये उन्नत, सांस्कृतिक व सभ्यता से ओत-प्रोत थे। जिन्होनें नवीन विचारधारा व दृष्टिकोण को जन्म दिया।

6. **व्यापारिक मध्यम वर्ग का उदय :** इटली के साहित्यकारों ने धर्म के स्थान पर लौकिक विषयों को अपने लेखन का विषय बनाया। धनी लोगों के उदारवादी व स्वतंत्र विचारों से जीवन में परिवर्तन आया। दाँते, पेटार्क, बुकासियो, फिलाकोला, लियोनादो ने इटली वासियों में प्राचीन मूल्यों को जागृत कर नवीन चेतना का संचार कर दिया।

7. **स्थानीय भाषाओं का विकास :** इटली में प्राचीन लैटिन एवं यूनानी भाषा के ग्रन्थों का स्थानीय भाषाओं में अनुवाद हुआ। कहानी, नाटक, गीत लेख आदि की विषयवस्तु मानव जीवन से संबंधित होने लगी। उपर्युक्त प्रमुख कारणों से इटली को पुनर्जागरण का अग्रदूत माना जाता है।

8. **रोमन सभ्यता की जन्मस्थली :** इटली प्राचीन रोमन सभ्यता का जन्म स्थल रहा था। इतालवी नगरों में मौजूद प्राचीन रोमन सभ्यता के बहुत से स्मारक अब भी लोगों को उसकी याद दिलाते हैं। प्राचीन रोम जैसी महत्ता एवं अपने देश को गौरवशाली बनाने का विचार उनके दिलो-दिमाग पर छाया हुआ था। यह ज्ञातव्य है कि प्राचीन रोमन संस्कृति पुनर्जागरण के लिए प्रेरणा का केन्द्र रही। सर्वप्रथम दांते की रचनाओं में इस प्रेरणा के चिह्न दिखाई देते हैं।

9. **उदारवादी समाज :** यूरोप के अन्य देशों की तुलना में इटली में सामाजिक वर्गों का विकास कुछ भिन्न रूप में हुआ। मध्यकाल के आरम्भ में प्रायद्वीप के एक बहुत बड़े भाग में नागरिकों तथा योद्धा वर्ग, जिसने राजनैतिक, सैनिक तथा सांस्कृतिक नेतृत्व पर एकाधिकार कर रखा था, के बीच सामन्ती जीवन देखने में नहीं आया था। जिसके फलस्वरूप प्रभावशाली भू-स्वामियों को अपदस्थ करके समीप के नगरों में जाने के लिये विवश किया गया। इन नगरों का साहसिक व्यापारियों के संरक्षण में विस्तार हो रहा था। इतालवी से अमीर वर्ग के महत्त्वपूर्ण समूहों, पुराने पतनशील परिवारों तथा नवोदित व्यापारिक वर्ग के नगरों में सम्मिलित रूप एकत्र हो जाने के कारण यूरोप के किसी अन्य देश से पहले एक समन्वित 'नागरिक समाज' की स्थापना हुई। फलस्वरूप उदारवादी एवं स्वतंत्र विचारों की पृष्ठभूमि में पुनर्जागरण का बीजारोपण हुआ।

10. **लौकिक शिक्षा पर बल :** मध्ययुगीन यूरोप में शिक्षा धर्म से विशेष प्रभावित एवं केन्द्रित थी किन्तु इटली में व्यापार के विकास के साथ एक नई प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता हुई, जिसमें व्यावसायिक ज्ञान, भौगोलिक ज्ञान आदि को समुचित स्थान मिला। इसके परिणामस्वरूप 'शिक्षा' में धर्म की विशिष्ट स्थिति गौण हुई तथा शिक्षा में ऐसी विचारधारा के प्रवेश की पृष्ठभूमि बनी, जो अधिक स्वच्छन्द थी और विज्ञान व तर्क का पुट लिए थी।

11. **पोप का निवास स्थल :** रोम, जहाँ पोप निवास करता था, अब भी सम्पूर्ण पश्चिमी यूरोपीय ईसाई जगत् का केन्द्र बना हुआ था। कुछ पोप पुनर्जागरण की भावना से अनुप्राणित हो, बड़े विद्वानों और कलावन्तों को रोम लाए और उनसे यूनानी पांडुलिपियों का लैटिन भाषा में अनुवाद कराया।उनमें से एक पोप 'निकोलस पंचम्' (1447-1455 ई.) ने 'वैटिकन पुस्तकालय' की स्थापना की और 'संत पीटर' के गिरजे को बनवाया। उसके अधीन लगभग समूचा रोम निर्मित हुआ। पोप के इन कार्यों का प्रभाव अन्यत्र भी हुआ।

12. **समृद्धि :** इटली एक समृद्ध देश था। इसकी समृद्धि का कारण 'विदेशी व्यापार' था। भूमध्यसागरीय देशों में सबसे अनुकूल स्थिति इटली की ही थी, जिससे मध्यकाल के अरब व्यापारियों द्वारा एशियाई देशों से लाया गया सामान अधिकांशतः इटली में ही बिकता था। यहीं से एशियाई वस्तुएँ अन्य यूरोपीय देशों में जाती थीं। इसके अलावा उत्तरी यूरोप में आने वाले व्यापारी भी इटली होकर 'पश्चिमी एशिया' जाते थे। इस प्रकार 'इटली' एक सुप्रसिद्ध 'व्यापारिक केन्द्र' के रूप में स्थापित हो चुका था।

पुनर्जागरण काल में साहित्य, कला एवं विज्ञान का विकास

- पुनर्जागरण युग में पुराने से सामंजस्य कर नवीन के निर्माण की शुरुआत हुई, जिसने न केवल साहित्य, कला एवं विज्ञान को अपितु मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया। चूँकि यूरोप के समस्त देशों की दशा उस समय एक जैसी नहीं थी, इसलिए पुनर्जागरण की गति व व्यापकता में क्षेत्रगत स्थिति के अनुकूल अन्तर रहा।

साहित्य के क्षेत्र में विकास

- पुनर्जागरण काल में जिस साहित्य की रचना हुई, उसका विशिष्ट महत्त्व है। पुनर्जागरण से पूर्व साहित्य का सृजन केवल **'लैटिन'** एवं **'यूनानी'** भाषाओं में ही होता था एवं देशी भाषाओं को असभ्य माना जाता था। लेकिन पुनर्जागरण काल में 'देशी भाषाओं' का अध्ययन-अध्यापन किया जाने लगा। विभिन्न देशों में लोग अपनी-अपनी मातृ-भाषाओं में साहित्य का सृजन करने लगे, जिससे इटालियन, फ्रेंच, स्पेनिश, पुर्तगाली, जर्मन, अंग्रेजी, डच, स्वीडिश आदि भाषाएँ विकसित हुई।
- 'विश्व इतिहास की झलक' नामक पुस्तक में 'पंडित नेहरू' ने लिखा है कि "इस प्रकार यूरोप की भाषाओं ने प्रगति की और वे इतनी सम्पन्न एवं शक्तिशाली हो गईं कि उन्होंने आज सुन्दर भाषाओं का रूप धारण कर लिया।" 'बोलचाल की भाषा' में साहित्य की रचना पुनर्जागरण की मुख्य विशेषता थी। 'बाइबिल' का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद इसी युग में किया गया।
- 'विषय-वस्तु', पुनर्जागरण काल के साहित्य की दूसरी प्रमुख विशेषता थी। मध्यकालीन साहित्य का मुख्य विषय 'धर्म' था। अधिकांश रचनाएँ धार्मिक विषयों पर आधारित होती थीं और उन रचनाओं पर धर्म की गहरी छाप होती थी। परन्तु इस युग के साहित्य में धार्मिक विषयों के स्थान पर मनुष्य के जीवन और उसके कार्यकलाप को महत्त्व दिया गया। इस युग के साहित्यकारों के विचार मध्ययुगीन धर्म सम्बन्धी वाद-विवादों व मान्यताओं से मुक्त थे। अब साहित्य आलोचना प्रधान, मानववादी और व्यक्तिवादी हो गया।
- इस युग के तीन महान् साहित्यकारों, यथा- शेक्सपियर, फ्रांसीसी लेखक रेबेलास, स्पेनवासी सर्वेन्टीज ने अपनी रचनाओं द्वारा मानव जीवन की साधारण घटनाओं को व्यक्त करने का प्रयत्न किया। शैली की दृष्टि से भी पुनर्जागरणकालीन यूरोपीय भाषाओं में लिखे जाने वाले साहित्य में परिवर्तन परिलक्षित होता है। शैली का परिवर्तन सबसे पहले 'कविता' में दिखाई देता है। दरबारी कवियों के अनुकरण को छोड़कर नए पदबधों और विषयों को अपनाया गया।
- **'नाटक'** में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। अब उसमें व्यंग्य का प्रयोग बढ़ा।
- 'गद्य लेखन' में भी महत्त्वपूर्ण विकास हुआ। पहले गद्य का प्रयोग केवल 'विद्वतापूर्ण विवेचना' के लिए होता था, 'कहानियाँ' तक कविता के रूप में लिखी जाती थीं। अब 'कथा साहित्य' का माध्यम 'गद्य' हो गया और 'गद्य कला' एक महत्त्वपूर्ण 'साहित्य विधा' के रूप में उभरी।
- इटालियन 'बुकासियो' की 'ड्रेकेमेरोन' इस क्षेत्र में एक ऐसी रचना थी, जिसने समस्त यूरोप के पुनर्जागरण युगीन 'गद्य लेखन' को प्रभावित किया।

☐ विशेषताएँ:-

1. मध्यकाल में विद्वान लोग केवल लैटिन अथवा यूनानी भाषा में ही साहित्य लिखते थे जो सामान्य व्यक्ति के लिए क्लिष्ठ व अपठनीय था। बोलचाल की भाषा असभ्य तथा पिछड़ी हुई मानी जाती थी। इससे बोलचाल की भाषाओं में साहित्य का सृजन नहीं हो पाया। पुनर्जागरण काल में बोलचाल की भाषाओं को सम्मान एवं गरिमा प्राप्त हुई। पश्चिमी यूरोप में बोलचाल की दो भाषाओं का विकास हुआ। एक थी 'रोमन्स भाषा' और दूसरी थी 'जर्मनिक भाषा'।

रोमन्स भाषा	जर्मनिक भाषा
इटैलियन	जर्मन
फ्रेंच	अंग्रेजी
स्पेनिश	नोर्वेजियन
पुर्तगाली	डच, स्वीडिस

2. पुनर्जागरण कालीन साहित्य की विषय वस्तु पर धार्म के स्थान पर मानववादी विचारधारा का प्रभाव था और अधिकांश रचनाओं के विषय सांसारिक जीवन पर आधारित थे, यही बात इस यग के साहित्य को मध्ययुगीन साहित्य से अलग करती है।

मध्यकालीन व पुनर्जागरण कालीन साहित्य में अंतर		
विषय	मध्यकाल में	पुनर्जागरण काल में
लेखक	पादरी हुआ करते थे	बौद्धिक विचारधारा वाले
विषयवस्तु	धार्मिक	मानववादी, व्यक्तित्ववादी, तार्किक
शैली	पद्य	गद्य शैली
भाषा	यूनानी/लैटिन	आम बोलचाल की भाषा

○ इतालवी साहित्य :

प्रमुख इतालवी साहित्यकार	
विद्वान	अवधि
दांते	1265-1321 ई.
फ्रांसेस्को पैट्रार्क	1304-1374 ई.
ज्योवानी बुकासियो	1313-1375 ई.
एरिआरटो	1474-1533 ई.
तासो	1544-1595 ई.
मैकियावेली	1469-1527 ई.

1. **दांते :** 'फ्लोरेंस' में जन्मे दांते ने अपने देश की बड़ी निष्ठा से सेवा की थी। किन्तु एक भ्रष्ट न्यायालय के समक्ष उस पर 'सार्वजनिक निधि' हड़पने का अभियोग लगाया गया और उसे फ्लोरेंस निर्वासन का दण्ड दिया गया। दांते के जीवन की सारी महत्त्वाकांक्षाएँ और लालसाएँ व्यर्थ हो गई थीं। वह फ्लोरेंस छोड़कर चला गया और पुन: कभी अपने जन्म-स्थल नहीं गया। दांते जैसे महान् कवि के जीवन का यह दु:खद पहलू था। दांते की तुलना 'होमर' से की जाती है।

- 'हैन्ड्रिक विलेम वॉन लून' ने 'द स्टोरी ऑफ मेनकाइन्ड' में लिखा है, ''स्वयं को अपनी अन्तर्चेतना और अपने समसामयिकों की दृष्टि में निर्दोष और निरपराध सिद्ध करने हेतु उस महाकवि ने अपनी रचना में काल्पनिक जगत् की अवतारणा की, जिसमें उसने उन सभी स्थितियों का सुविस्तृत वर्णन किया, जिनके कारण उसे पराजय और असफलता का सामना करना पड़ा। उसने लोलुपता, कामुकता और जुगुप्सा की उन निराशाजनक स्थितियों का चित्रण किया, जिनके कारण उसका प्रिय देश इटली दुराचारी एवं स्वार्थी सम्राटों के निर्दयी सैनिकों का संग्राम क्षेत्र बन गया।'' 'दांते' की प्रसिद्ध कृति 'डिवाइन कॉमेडी' में एक 'काल्पनिक जगत्' की यात्रा का वर्णन है। दांते इस काल्पनिक यात्रा में नरक, पापमोचन स्थल तथा स्वर्ग की यात्रा करता है।

नरक की यात्रा	यातनाओं और पीड़ा का दृश्य दिखाई दिये।
पापमोचन स्थल की यात्रा	संयम और कठोर जीवन से आत्मशुद्धि होती है
स्वर्ग की यात्रा	अनंत सुख की प्राप्ति।

- इस प्रकार यह यात्रा 'दु:ख' से प्रारम्भ होकर 'आत्मिक सुख' में समाप्त होती है, इसलिए दांते ने इसे 'कॉमेडी' कहा है। इस रचना के द्वारा मनुष्य को 'नैतिक' एवं 'संयमी जीवनयापन' करने की प्रेरणा दी गयी है। दांते ने इसके माध्यम से लोगों को मानव प्रेम, देश प्रेम तथा प्रकृति प्रेम की शिक्षा दी है। इसकी विषय-वस्तु 'मध्यकालीन' और 'आध्यात्मिक' है, लेकिन साहित्यिक श्रेष्ठता के कारण आध्यात्मिक विषय का भी एक सरस चित्रण किया गया।

- दांते की अन्य रचनाओं में 'बीतानोआ' एवं 'द मोनार्किया' भी श्रेष्ठ हैं। 'बीतानोआ' का शाब्दिक अर्थ, 'नया जीवन है या प्रेमगीतों का एक संग्रह है।' दांते ने इस रचना में ग्रिजाघर की महिला 'बीट्रिस' का सौन्दर्य चित्रण किया है। 'द मोनार्किया' में दांते प्राचीन रोमन साम्राज्य के आदर्शों का तर्कपूर्ण समर्थन तथा 'व्यक्तिगत स्वतन्त्रता' का समर्थन करता है। दांते ने इस कृति में यह स्थापित किया कि अधार्मिक विषयों में 'राजशक्ति' ही सर्वोच्च होनी चाहिए। 'पोप विरोधी' होने के कारण इस कृति को 1339 ई. में सार्वजनिक रूप से जलाया गया और 1554 ई. में उसे 'प्रतिबन्धित पुस्तकों' की श्रेणी में रख दिया गया था। 'दांते को इतालवी कविता का पिता' कहा जाता है। उसने अपनी कविताएँ मातृ भाषा में लिखीं।

दांते की प्रमुख रचनाएँ		
क्र.	**रचना**	**विषय**
1.	डिवाइन कॉमेडी	दाँते ने अपनी मातृभाषा 'तुस्कानी' में 'द डिवाइन कॉमेडी' (सर्वोपरि रचना) की रचना की थी, इस दृष्टि से दाँते को पुनर्जागरण का संदेशवाहक कहा जाता है। इसकी विषय-वस्तु मृत्यु के बाद आत्मा की स्थिति हैं। आत्मा की नरक और स्वर्ग की काल्पनिक यात्र का वृतान्त हैं।
2.	बीतानोआ	शाब्दिक अर्थ 'नया जीवन'। इस रचना के माधयम से दा¡ते ने लोगों को मानवता, प्रेम, एकता, प्रकृति प्रेम और देश प्रेम का संदेश दिया और वितानोआ में एक ब्रिटिªश महिला के सौन्दर्य का वर्णन किया।
3.	द मोनार्किया	प्राचीन रोमन साम्राज्य के आदर्शों का तर्कपूर्ण समर्थन तथा 'व्यक्तिगत स्वतन्त्रता' का समर्थन करता है।
4.	द वल्गारी इलौक्योशिया	लैटिन भाषा का महत्वपूर्ण ग्रंथ।

2. पेट्रार्क : मानववादी के रूप में पुनर्जागरण का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रथम व्यक्ति 'पैट्रार्क' ही था, इसलिए उसे 'मानववाद का पिता' कहा गया है। पेट्राक का जन्म 1304 ई. में फ्लोरेंस से कुछ दूर 'ऐरोजो' नगर में हुआ था। कुछ इतिहासकार दांते की अपेक्षा पैट्रार्क से पुनर्जागरण का जन्म मानते हैं क्योंकि 'डिवाइन कॉमेडी' की विषय-वस्तु 'मध्यकालीन' है, जबकि 'पैट्रार्क' की कविताओं में नवीनता दृष्टिगोचर होती है।

- पैट्रार्क को उसके पिता वकील बनाना चाहते थे, किन्तु वह शुरू से ही विद्वान् और कवि बनना चाहता था। उसने अपनी अभिरुचि को चरमसीमा पर पहुँचाया।
- पेट्रार्क ने अनेक समुद्र यात्राएँ कीं। वह फ्लाडर, राइन, पेरिस, लेगे और रोम में पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपियाँ लिखता रहा। बाद में 'बोक्ल्यूज' के पर्वतों में निवास कर, अध्ययन और लेखन कार्य करता रहा। कुछ समय बाद वह अपनी विद्वत्ता और कवित्व के लिए लोगों में इतना प्रख्यात हो चुका था कि पेरिस विश्वविद्यालय ने शिक्षार्थियों को शिक्षा देने एवं 'नेपल्स' के राजा ने अपनी प्रजा की शिक्षा के लिए उसे निमंत्रित किया।

- पैट्रार्क ने मध्ययुगीन शिक्षा और साहित्य के स्थान पर लोगों का ध्यान 'यूनानी' और 'रोमन' साहित्य की ओर आकृष्ट किया। पैट्रार्क ने अपनी कविताओं में प्रकृति एवं मनुष्य के हर्ष व विषाद का मार्मिक वर्णन किया है। 'लोक रुचि' का उसने अपनी रचनाओं में सर्वाधिक ध्यान दिया है। पैट्रार्क ने 'यूनानी' और 'लैटिन' भाषा के पुराने हस्तलिखित ग्रंथों को खोजने तथा उनका संग्रह करने में अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दी। उसने कई पुस्तकालय भी खोले और लोगों को पुस्तकों से प्रेम करना सिखाया।
- लिवी, होमर, सिसरो आदि की रचनाओं में भी उसकी गहरी अभिरुचि थी। उसने न प्राचीन लेखकों के साथ 'काल्पनिक पत्राचार' किया। उसकी मृत्यु के बाद ये पत्र ''फेमीलियर लेटर्स" नामक शीर्षक से प्रकाशित हुए। इन पत्रों में उसका प्राचीन सभ्यता के प्रति लगाव प्रदर्शित होता है। पेट्रार्क ने ''उसने देशवासियों में पुरातन यूनानी एवं रोमन साहित्य के प्रति अभिरुचि जागृत की।''
- पेट्रार्क अपने युग का प्रथम विद्वान् था, जिसने प्राचीन साहित्य की पूर्णता और सौन्दर्य को समझा एवं संस्कृति के प्रसार का एक सफल माध्यम स्वीकार किया। पैट्रार्क की प्राचीन के प्रति पूर्ण निष्ठा के दो महत्त्वपूर्ण तथ्य थे- उसने साहित्यिक कृतियों की सर्वोत्कृष्टता की आवश्यकता पर बल दिया। प्राचीन उत्कृष्ट रचनाओं में जीवन के प्रति पूर्वोपेक्षा अधिक तर्कसंगत एवं आनन्ददायक दृष्टिकोण की खोज करने का प्रयास किया।
- यह प्राचीन ग्रंथों की 'मानवीय व्याख्या' है और 'मानववादी शब्द' इसी से उद्धृत है। पैट्रार्क ने समूचे यूरोप में 'मानववादी विचारधारा' को प्रोत्साहित किया।

पेट्रॉक की प्रमुख रचनाएँ

क्र.सं.	रचना	विशेष
1.	अफ्रीका	पेट्रॉक ने विख्यात रोमन कवि वर्जिल की शैली का अनुकरण करते हुए **'अफ्रीका'** नामक एक लम्बा गीत लिखा। इसमें रोमन के प्रसिद्ध सेनानायक सीपियों के जीवन के अभूतपूर्व विवरण दिया गया है।
2.	सोनेटो	पेट्राक अपने **'सोनेटो'** (चौदह पंक्तियों का गीत) के लिए प्रसिद्ध है और इन्हीं के द्वारा पेट्राक ने इटालियन साहित्य को यूरोपीय साहित्य में सर्वश्रेष्ठ बना दिया।
3.	फेमीलियर लेटर्स	इन पत्रों में उसका **प्राचीन सभ्यता के प्रति लगाव** प्रदर्शित होता है।

3. बुकासियो :

- पुनर्जागरण का पूर्ण प्रतिनिधित्व 'पैट्रार्क' के शिष्य 'बुकासियो' ने किया। बुकासियो को 'इतालवी गद्य का जनक' माना जाता है। बुकोसियो का जन्म 1313 ई. में पेरिस में हुआ परन्तु जीवन फ्लोरेंस में व्यतीत हुआ।

बुकासियों की प्रमुख रचनाएँ		
क्र.सं.	रचना	विशेष
1.	द डिकैमेरॉन	यह बुंकासियो की सर्वश्रेष्ठ रचना है, इसमें 100 कहानियों का संकलन है और उनके माधयम से मानवीय निर्बलता का बड़ी खूबी के साथ मनोवैज्ञानिक विष्ठलेषण किया गया है।
2.	जिनियोलॉजी ऑफ द गॉड	लौकिक विचारों के लिए प्रसिद्ध। ज्ञान मानव को किस प्रकार नैतिक, गुणवान एवं बुद्धिमान बनाता है, इसका स्पष्ट वर्णन दिया गया है।
3.	डी मुलिएरिबस क्लैरिस	106 प्रसिद्ध महिलाओं की जीवनियाँ
4.	फिलास्त्रतो	–
5.	फिलोकोला	–

अन्य इतालवी साहित्यकार			
क्र.सं.	साहित्यकार	रचना	
1.	एरिओस्ट्रो	औरलेंडो पुरिओसी	
2.	टासो	मुक्त जेरूसलम	
3.	मैकियावेली	द प्रिंस	द हिस्ट्री ऑफ फ्लोरेंस
		डिसकोर्स ऑफ लिवी	द आर्ट ऑफ वार
4.	फिसनी	प्लेटों के दर्शन की विस्तृत व्याख्या की थी।	

- **फ्रांसीसी साहित्य :** फ्रांसीसी शासकों ने इतालवी पुनर्जागरण की कृतियों में पर्याप्त रूचि ली और अपने देश में उनके अधययन की व्यवस्था की। इतालवी साहित्यकारों के सम्पर्क के परिणामस्वरूप फ्रांसीसियों के सांसारिक दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आया और मानववादी भावना का विकास हुआ।पुनर्जागरण की भावना से प्रभावित होकर फ्रांस के कई लेखकों एवं कवियों ने अपनी मातृभाषा फ्रेंच में अपनी रचनाएँ लिखी। जिनमें प्रमुख है–

प्रमुख फ्रांसीसी साहित्यकार	
रेबेलास	
1.	रैवेलास ने हास्य और व्यंग्य मिश्रित शैली में गरगन्तुआ, पेन्टेगेरूअल की रचना की।
2.	इसने अधिकार सम्पन्न लोगों तथा धार्मिक कट्टरता और अन्धाविश्वासों की खिल्ली उड़ाई।
3.	इसने सशक्त एवं ओजस्वी फ्रेंच भाषा में 'महान गरगन्तुआ का महान जीवन' की रचना की।
4.	इनका प्रसिद्ध कथन था "केवल मनुष्य ही हँस सकता है। जिसमें नैतिक यथार्थ, अनुभव की प्यास होती है।"
जॉन कॉल्विन	
1.	फ्रेंच गद्य को प्रभावशाली बनाने में सर्वाधिक योगदान।
2.	फ्रांस के मानववाद का विकास सम्राट फ्रांसिस प्रथम के संरक्षणत्व में हुआ जिसने 'कॉलेज दी फ्रांस' की स्थापना की एवं लैटिन व यूनानी भाषाओं के विद्वानों को प्रोफेसर के पदों पर नियुक्त किया।

मॉन्टेन	
1.	इसकी कृतियों से 'निबंध लेखन' का आरम्भ होता है।
2.	निबंध सरल एवं सुबोध 'फ्रेंच भाषा' में लिखे गये। विषय-मैत्री, शासनतंत्र शिक्षा, युद्ध से सम्बन्धित हैं।
3.	उसके लेखन ने फ्रांसीसी भाषा और साहित्य को भावी उत्कर्ष के लिए तैयार किया।
4.	मॉन्टेन 'लेखन' व 'चिन्तन' में 'वाल्तेयर' का अग्रगामी था।
4.	मॉन्टेन, एक निबंधकार के साथ-साथ 'मानववादी' भी था।
मार्सिगेलियो-	डिफेंडर ऑफ पीस (शांति का रक्षक) की रचना की।
फ्रायसर्ट-	इसने फ्रेंच भाषा में काव्य तथा गद्य दोनों ही क्षेत्रें में रचनाएँ की।

अंग्रेजी साहित्य : पुनर्जागरण की लहर ने इंग्लैण्ड को भी प्रभावित किया और रानी एलिजाबेथ का युग (1558-1603) पुनर्जागरण का चरमोत्कर्ष काल माना जाता है। तेरहवीं सदी में इंग्लैण्ड के कुलीन लोग फ्रेंच भाषा में और सामान्य लोग सैक्सन भाषा में बोलते थे। शीघ्र ही दोनों भाषाओं का महत्त्व कम हो गया और एक नई भाषा 'अंग्रेजी' का उदय हुआ। जिसने बाद में साहित्यिक भाषा का रूप ले लिया। प्रमुख साहित्यकार–

जाफरे चौसर	
1.	अंग्रेजी साहित्य का प्रारंभ 'चौसर' से ही प्रारम्भ होता है। इसलिए इन्हें 'अंग्रेजी काव्य का पिता' कहा जाता है।
2.	जाफरे चौसर' इनकी की सर्वश्रेष्ठ कृति 'कैन्टरबरी टेल्स' है। जिस पर 'बुकासियो' की 'डेकेमेरोन' का प्रभाव दिखाई देता है।
3.	इसमें कैन्टरबरी की यात्रा पर निकले लोगों के वास्तविक गुण-दोषों का वर्णन किया गया है।
4.	इसने लम्बी कविता के रूप में 'सोनेट' की रचना की।

सर टॉमस मूर	
1.	ये धर्म और विधिशास्त्र का ज्ञाता थे।
2.	पुस्तक 'यूटोपिया' में इंग्लैण्ड के जनजीवन में व्याप्त सामाजिक बुराइयों और आर्थिक दोषों का वर्णन किया है।
3.	इस पुस्तक में 'आदर्श समाज' और 'आदर्श राज्य के सिद्धान्तों' का वर्णन किया गया है।
फ्रांसिस बेकन	
1.	ये पुनर्जागरण काल के सर्वोत्तम 'निबंधकार' थे।
2.	बेकन के लेखों की शैली 'काव्यात्मक' है।
3.	इन्होंने तर्क, अनुभव और प्रमाण पर बल दिया।
4.	इतिहासकार बेन फिंगर के अनुसार, "बेकन ने मनुष्य का ध्यान व्यर्थ के धार्मिक विचारों से हटा दिया और उसे प्रकृति के अध्ययन एवं मानव हित में लगाया।
5.	रचना-द एडवान्समेंट ऑफ लर्निंग एवं द न्यू अटलाण्टिस।

विलियम शेक्सपियर	
1.	ये अपने युग का महान् कवि एवं नाटककार माना जाता है।
2.	शेक्सपियर के साहित्य में 'अंग्रेजी भाषा का चरमोत्कर्ष' दिखाई देता है।
3.	इन्होंने 'मनुष्य के व्यक्तित्व को उठाने' का कार्य किया।
4.	इन्होंने अपनी रचनाओं में 'मानवीय स्वभाव' के सभी पहलुओं का सशक्त एवं सजीव वर्णन किया है।
5.	शेक्सपियर के 'मानव' में सभी गुण एवं दोष मौजूद हैं।
6.	शेक्सपियर ने 'मैकबेथ' में उसने कहा है कि "एक बुरे से बुरे व्यक्ति में भी कुछ न कुछ मानवीय करुणा का अंश विद्यमान रहता है।"

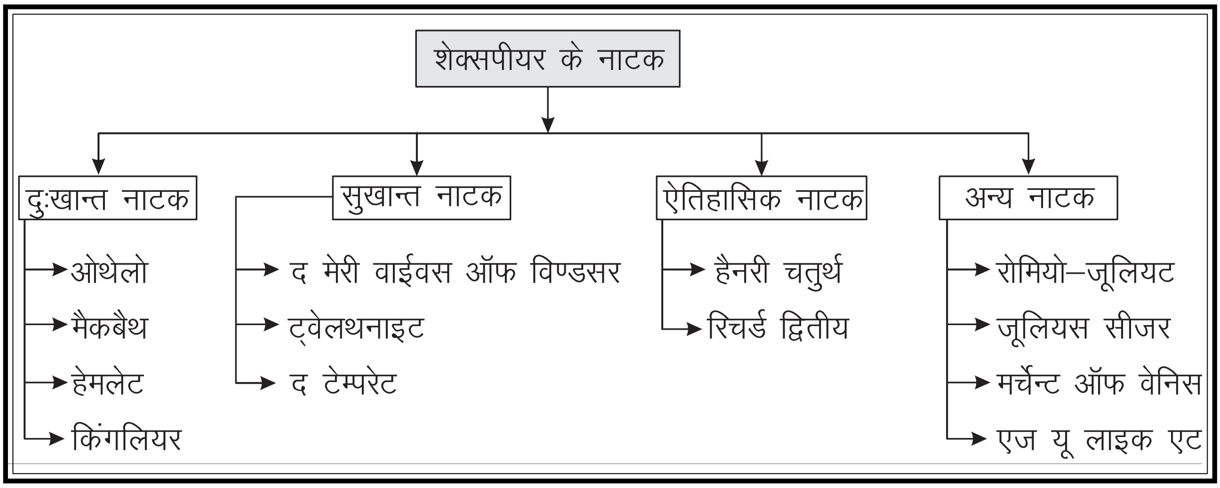

अन्य अंग्रेजी साहित्यकार

क्र.सं.	साहित्यकार	रचना
1.	एडमण्ड स्पेंसर	फेयरी क्वीन
2.	क्रिस्टोफर मार्लो	1. टैम्बेर लेन, 2. द ज्यू ऑफ माल्टा, 3. डॉक्टर फोस्टर
3.	मिल्टन	1. पेराडाइज लास्ट, 2. पेराडाइज रिगेन्ड
4.	हॉब्स	लेवियाथन

प्रमुख जर्मन साहित्यकार		
क्र.सं.	साहित्यकार	विशेष
1.	मार्टिन लूथर	जर्मन राष्ट्रों के सांमतों को संबोधान, चर्च की बेबीलोनियाई कैद, ईसाई मनुष्य की मुक्ति।
2.	रूडोल्फ एग्रीकोला	हेडलबर्ग विश्वविद्यालय में प्रोफेसर
3.	कोनार्ड कोल्टस	मानववादी विचाराधारा को बढ़ाया
4.	रियूकेलिन	लेटिन, यूनानी, हिब्रू भाषा के विद्वान
5.	मेलांकथन	बिटनबर्ग विश्वविद्यालय में प्राध्यापक

प्रमुख स्पेनिश साहित्यकार		
क्र.सं.	साहित्यकार	विशेष
1.	सर्वान्टीज	प्रमुख रचना- **डॉन क्विकसोट** मानवजाति का चित्रण, खीर का प्रमाण खाने में है। एक से पंखों के पक्षी एक साथ रहते हैं।
2.	लोपडेवेग	रंगमंचकार
3.	केल्डेरन	प्रसिद्ध कवि

प्रमुख पुर्तगाली साहित्यकार		
क्र.सं.	साहित्यकार	विशेष
1.	केमोंस	'लुसियाड' प्रमुख रचना। इसमें वास्कोडिगामा की यात्रा का वर्णन है।

प्रमुख हॉलैण्ड (डच) साहित्यकार		
क्र.सं.	**साहित्यकार**	**विशेष**
1.	**इरास्मस**	इसका जन्म 1466 ई. में 'एमस्टरडम' में हुआ।
		इरैस्मस ने फ्रांस, इंग्लैण्ड तथा इटली में अध्ययन किया और नैतिक सच्चाई के उपदेशों को ग्रहण किया।
	द प्रेज ऑफ फॉली (मूर्खता की प्रशंसा)	इसमें पादरियों व चर्च के भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया गया। बाइबिल का शुद्ध अनुवाद किया, मानववादी लेखक, अंधाविश्वास, असहिष्णुता और अज्ञान के विरूद्ध संघर्ष किया। संसार की सबसे ज्यादा बिकने वाली पहली पुस्तक।
	कोलोलोक्विज	–

कला के क्षेत्र में विकास

- प्राचीनता के प्रति यूरोपवासियों का मोह केवल दर्शन और साहित्य तक ही सीमित नहीं था बल्कि कला को भी नया रूप प्रदान करने में उन्होंने पहल की। इस युग की कला का उद्देश्य- 'जीवन एवं प्रकृति से तारतम्य' स्थापित करना था, किन्तु मध्यकाल में जीवन तथा प्रकृति के सौन्दर्य में लोगों की विशेष अभिरुचि नहीं थी। पुनर्जागरण काल में 'कला' धार्मिक बन्धनों से मुक्त होकर 'यथार्थवादी' हो गयी। कला एवं सौन्दर्य के प्रदर्शन में कलाकार की रुचि बढ़ने लगी।

- पुनर्जागरण काल में कला का क्षेत्र व्यापक हो गया और सर्वसाधारण को भी उसमें स्थान मिला। इसमें संदेह नहीं है कि कला के लिए अभी भी धार्मिक विषयों का चयन किया जाता था परन्तु अब सौन्दर्य, सजावट तथा प्रेम की उपेक्षा नहीं की गई और मानवीयता पर अधिक ध्यान दिया गया। इस काल में अन्य क्षेत्रों की **अपेक्षा कला का अधिक विकास हुआ और एक नयी कला का जन्म हुआ।** 'रैम्जे म्योर' के अनुसार ''पुनर्जागरण की भावना ने मनुष्य को अच्छे कोर्यों के लिए प्रेरित किया और विशेष रूप से कलात्मक वस्तुओं के निर्माण में आश्चर्यजनक गति प्रदान की। इसका सर्वप्रथम प्रभाव इटली में तथा बाद में पश्चिम के अन्य देशों पर पड़ा।''

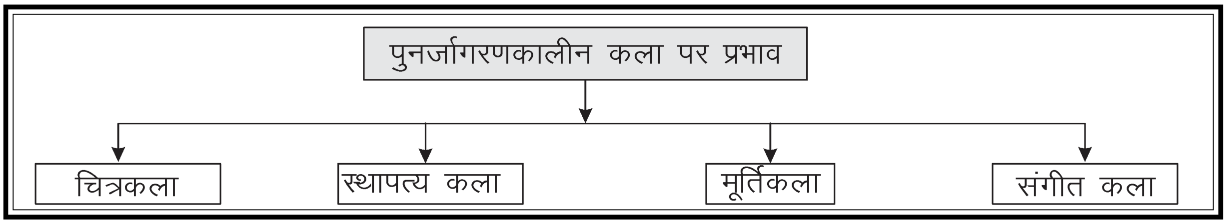

विशेषताएँ:-

1. मध्ययुग में कला का अपना स्वतंत्र एवं पृथक स्थान नहीं था वह धर्म के साथ जुड़ी हुई थी।
2. पुनर्जागरण काल में कलाकार धार्मिक बन्धनों से मुक्त होकर यथार्थवादी बन गये।
3. अब धर्म का स्थान सांसारिकता, वैराग्य का सौन्दर्य और विरक्ति का स्थान आसक्ति ने ले लिया।
4. कला में मौलिकता व वास्तविकता के साथ कलाकार स्वतंत्र कलाकृति रचने लगे।
5. कला में मानववादी चेतना का उदय हुआ।

चित्रकला :

- पुनर्जागरण काल में सबसे अधिक विकास चित्रकला के क्षेत्र में हुआ। 15वीं शताब्दी तक चित्रकला में धार्मिक विषयों, रंगों एवं विषयों का चयन भी सीमित था। उस काल के चित्रों में उदासी एवं एकरसता दृष्टिगोचर होती है। उनके विषय 'ईसा' और 'मरियम' ही थे, किन्तु वे अब आदमी को भी चित्रित करने लगे। अब चटख रंग वर्जित नहीं रहे। चित्रकला की शैली- चित्ताकर्षक, हृदयग्राही, बुद्धिमानी और अत्यन्त लावण्यमय। सर्वप्रथम 14वीं शताब्दी में इटली के 'जियटो' ने परम्परागत 'बाइजेन्टाइन शैली' से हटकर 'मानव एवं प्रकृति' पर अनेक चित्र चित्रित किये। पुनर्जागरण काल के चित्रकारों ने मानव शरीर का सूक्ष्म अध्ययन किया और यह ज्ञान प्राप्त किया कि मनुष्य के शरीर की पेशियाँ और जोड़ किसी विशिष्ट स्थिति में कैसे उभरते हैं। इसलिए वे अपनी कलाकृतियों को अधिक जीवन्त बना सके।
- **जियटो** – इसे 'चित्रकला का जन्मदाता' माना जाता है। परम्परागत बाइजेन्टाइन शैली के साथ पर प्राकृतिक क्षेत्र को अपनाकर चित्रकला को नई दिशा प्रदान की। कैनवास पर चित्र बनाए। इसने प्रकाश व छाया के रंगों के समन्वय तथा आकृति के सही अंकन पर अधिक जोर दिया गया।
- **'फ्रान्जेलिको** –इसका हाथ रंग-रेखा के मामले में बहुत सधा हुआ था और इसी सधे हुए हाथ से वह 'सेंट मार्क्स मोनेस्ट्री' के चालीस कक्षों की दीवारों पर 'बाइबिल' के चित्र बनाता गया। यह 'फ्रेस्को (भित्तीचित्र) विधि' एवं 'टेम्पेरा विधि' से चित्र बनाते थे। टेम्पेरा विधि- इस विधि में रंगों में अंडा, गोंद या फलों का गूदा मिलाकर बनाए गए चित्र बनाये जाते थे। इसके चित्रों में 'मेडोना' का चित्र प्रसिद्ध है, इसमें मेरी शिशु यीशु को गोद में लिए हुए बैठी है। सुनहरे फ्रेम से मेडोना का यह चित्र एक अमर कृति है। इसमें 'बारह स्वर्गदूत' चारों तरफ अंकित किए हुए हैं, ये बारहों स्वर्गदूत 'बारह प्रकार के वाद्य यंत्र' बजा रहे हैं।
- **'मेशेशियो'**–कम उम्र में ही इसकी मृत्यु हो गई थी। उसकी मृत्यु के बाद लोग 'धन्य' कहकर उसके बारे में बातें करने लगे। मेशेशियो के चित्रों में सारी चीजें सामने की ओर एक साथ सपाट ढंग से चित्रित नहीं हैं। ये चित्र में आगे-पीछे निकट दूर होने का बोध कराती हैं। चित्र में इस गुण को 'परिप्रेक्षित' कहते हैं। मेशेशियो के एक प्रसिद्ध चित्र में ईडन गार्डन से एक स्वर्गदूत 'आदम' और 'हव्वा' को बाहर निकाल रहा है।

- **लिओनार्दो**–यह वैज्ञानिक, गणितज्ञ, इंजीनियर, संगीतकार, दार्शनिक और चित्रकार सब एक साथ था। इसका जन्म 1452 ई. में फ्लोरेंस के निकट 'विंची' में हुआ था। वह एक नाजिर और एक किसान कन्या की अवैध सन्तान था। बचपन से ही उसे संगीत, रेखागणित और चित्रकारी में विशेष दक्षता प्राप्त थी। 15 वर्ष की उम्र में वह प्रसिद्ध चित्रकार 'वेरोकक्यो' से प्रशिक्षण प्राप्त करने लगा तथा उसने अपने कला कौशल एवं चित्रों के अद्भुत सौन्दर्य से अपने गुरु को चकित कर दिया। वह आशु कवि भी था, जो 'तंतुवाद्य' की धुन पर अपनी रचनाएँ बड़े सुरीले स्वर में गाता था यह वाद्य तंत्र उसने स्वयं ही बनाया था। उसने अपने चित्रों को यथार्थ बनाने के लिए मानव शरीर विज्ञान का गहन अध्ययन किया। उसने रंगों एवं चित्रण की विधियों में समन्वय के प्रयोग किये। उसकी चित्रकला की विशेषताएँ हैं– "सादगी तथा भावाभिव्यक्ति, प्रकाश और छाया रंगों का उपयुक्त चयन और शरीर के प्रत्येक अंगों का स्वाभाविक एवं सुन्दर प्रदर्शन।"
- 'लास्ट सपर' में 'ईसा' को अपने अनुयायियों के साथ आखिरी भोजन के समय बैठा दिखाया गया है। ईसा के चेहरे पर शान्ति के भाव हैं परन्तु उसके शिष्य हतप्रभ दिखाई देते हैं और एक शिष्य के चेहरे पर अपराध की झलक दिखाई देती है।
- 'मोनालिसा' किसी सुन्दरी का चित्र नहीं है लेकिन उस साधारण सी दिखाई पड़ने वाली महिला की 'रहस्यमय मुस्कान' का अर्थ आज भी दर्शक के लिए रहस्य बना हुआ है।
- **माइकेल एंजेलो**–कलाकार के साथ मूर्तिकार, स्थापत्यकार, इंजीनियर और कवि भी था। वह 'मनुष्य' को सृष्टि की सबसे सुन्दर अभिव्यक्ति मानता था। उसके बनाए लगभग 145 चित्रों में सौन्दर्य भावना, कौशल और प्रतिभा का स्पष्ट प्रमाण मिलता है। रोम के 'सिस्टाइन गिरजाघर' की भीतरी छत पर बाइबिल के दृश्यों का उसने, जो चित्रांकन किया, वह आज भी कला मर्मज्ञों के लिए विस्मय की वस्तु है। 1541 ई. में इसी चर्च की दीवार पर बना उसका एक चित्र 'लास्ट जजमेंट', जिसे पूरा करने में उसे लगभग आठ वर्ष लगे, सर्वश्रेष्ठ है। अनेक आकृतियों वाले इस विशाल चित्र में जीवन के अनेक रूप विद्यमान हैं। एंजेलो ने गिरजाघर को चित्रित करने का कार्य मई, 1508 ई. में शुरू किया। इसे पूरा करने में उसे चार वर्ष से अधिक समय तक परिश्रम करना पड़ा। इसने अपनी कलाकृतियों में प्रायः 'खनिज रंग' ही इस्तेमाल किए हैं। माइकेल एंजेलो ने अफगानिस्तान से मँगाए खनिज 'लाजवर्द' से हल्के, गहरे, चटकीले रंग बनाये। ये सब रंग पीसकर तैयार किये गये थे और इनमें पानी मिलाकर इन्हें तरल रूप में लगाया गया था।
- **राफेल**–इस पर एंजेलो और लिओनार्दो दोनों का प्रभाव पड़ा। इसलिए उसके चित्रों में दोनों की चित्र शैलियों का समन्वय दिखाई देता है।

- इसके चित्र सजीवता एवं सुन्दरता के कारण आज भी विश्व प्रसिद्ध हैं। उसने वात्सल्य और मातृत्व का मनोहर चित्रण किया है। इसकी सर्वश्रेष्ठ रचना जीसस क्राइस्ट की माँ 'मेडोना' का चित्र है। मेडोना का दिव्य नारीत्व आज भी दर्शकों का मन मोह लेता है।
- इसके द्वारा बनाए भित्ति चित्र (म्यूरल पेंटिंग) और समकालीन लोगों के चित्र (पोर्ट्रेट) अद्वितीय हैं। बहुत से विद्वानों का मत है कि चित्रकला के क्षेत्र में समन्वयात्मक सौन्दर्य के चित्रण में राफेल माइकेल एंजेलो से भी श्रेष्ठ था।
- **वेसेलो तिशियन** – इसने पोपों, पादरियों, सामन्तों और सम्भ्रान्त परिवार की महिलाओं के अनेक पोर्ट्रेट बनाये। 'दस्ताने पहने हुए आदमी का चित्र' उसके चित्रों में प्रमुख एवं आकर्षक है। तिशियन की मृत्यु प्लेग से हुई।
- **ह्यूबर्ट वान आईक** –इन्होंने रंगों को मिश्रित करने की एक नवीन पद्धति ढूँढ कर चित्रकला को एक **इयान वान आईक** नया मोड़ दिया।
- ये रंगों के मिश्रण के लिए अण्डे की सफेदी के स्थान पर तेल का प्रयोग करने लगे, जिससे चित्रों का रूप अधिक निखर गया।
- **'फ्रांज हाल्स'**–इसकी गणना विश्व के महान पोर्ट्रेट चित्रकारों में की जाती है। इसके चित्रों के चेहरों पर कई भाव आ जा रहे हैं। उसके चित्रों को देखकर ऐसा लगता है कि जैसे अगले क्षण ही किसी चेहरे का भाव बदल जाएगा। इसका प्रसिद्ध चित्र 'लाफिंग कैवलरी' है।
- **राइन रेम्ब्रां** –यह अपने 'रेखाचित्रों' के लिए विख्यात रहा है। रंगों, प्रकाश और छाया के अकन में उसे विशेष निपुणता प्राप्त थी। वर्तमान के श्रेष्ठ चित्रों में रेम्ब्रां द्वारा बनाया गया 'रात का पहरा' भी है परन्तु उस समय इस चित्र की हँसी उड़ाई गई। विपत्ति के समय शहर का, जो रक्षक दल रात में पहरा देता था, उस दल ने रेम्ब्रां को दल का एक चित्र बनाने का काम सौंपा था। लोगों का विवाद इस पर था कि चित्र रात के स्थान पर दिन की कोई घटना है, जबकि चित्र का नाम 'रात का पहरा' है।
- **डीगावेलेस कैथ**–इसने राजवंशी लोगों के अनेक आकर्षक पोर्ट्रेट बनाये।
- **अलब्रेख्त ड्यूरेर**–इसने लकड़ी एवं तांबे के पत्तरों पर आश्चर्यजनक चित्रों को अंकित किया। वर्तमान में 'नूरेमबर्ग' में 'ड्यूरेर संग्रहालय' है।

पुनर्जागरण काल के प्रमुख चित्रकार			
चित्रकार	**देश**	**समय**	**विशेष**
जियटो	इटली	14वीं शताब्दी	इन्हें 'चित्रकला का जन्मदाता' कहा जाता है।
फ्रान्जेलिको	इटली	1387-1455 ई.	इसका 'मेडोना' का चित्र एवं 'सेंट मार्क्स मोनेस्ट्री' के चालीस कक्षों की दीवारों पर 'बाइबिल' के चित्र प्रसिद्ध है।
मेशेशिया	इटली	15वीं सदी	इसके प्रसिद्ध चित्र में ईडन गार्डन से एक स्वर्गदूत 'आदम' और 'हव्वा' को बाहर निकाल रहा है।
लिओनार्दो	फ्लोरेंस	1452-1519 ई.	इसके चित्रों में 'लास्ट सपर'' और 'मोनालिसा' प्रमुख है।
माइकेल एंजेला	इटली	1475-1564 ई.	रोम के 'सिस्टाइन गिरजाघर' की छत पर बाइबिल के दृश्य एवं 'लास्ट जजमेंट' प्रसिद्ध चित्र हैं।
राफेल	इटली	1483-1520 ई.	इसकी सर्वश्रेष्ठ रचना जीसस क्राइस्ट की माँ 'मेडोना' का चित्र है।
वेसेलो तिशियन	इटली	1477-1576 ई.	'दस्ताने पहने हुए आदमी का चित्र' प्रसिद्ध है।
ह्यूबर्ट वान आईक	बेल्जियम	1366-1426 ई.	रंगों को मिश्रित करने की एक नवीन पद्धति का विकस किया।
इयान वान आईक	बेल्जियम	385-1441 ई.	रंगों को मिश्रित करने की एक नवीन पद्धति का विकस किया।
फ्रांज हाल्स	डच	1580-1660 ई.	इसका प्रसिद्ध चित्र 'लाफिंग कैवलरी' है।
राइन रेम्ब्रां	डच	1606- 1669 ई.	'रात का पहरा' नामक चित्र प्रसिद्ध है।
डीगावेलेस कैथ	स्पेन	1599-1660 ई.	इसने राजवंशी लोगों के अनेक आकर्षक पोर्ट्रेट बनाये।
अलब्रेख्त ड्यूरेर	जर्मनी	1471-1528 ई.	इसने लकड़ी एवं तांबे के पत्तरों पर चित्र अंकित किये।

स्थापत्य कला

1. गोथिक शैली : मध्ययुग में स्थापत्य कला के क्षेत्र में गोथिक शैली का अधिक प्रचलन रहा था और यूरोप में इसी शैली के आधार पर अधिकांश भवनों का निर्माण हुआ।

i. यह कला बर्बर शैली भी कहलाती है। ii. इस शैली में नुकीले मेहराबो का प्रयोग होता था।

iii. अर्द्धगुम्बद का प्रयोग होता था।

2. क्लासिकल शैली : पुनर्जागरण काल में प्राचीन स्थापत्यकला के प्रति आकर्षण बढ़ा और रोमन, यूनानी तथा अरबी स्थापत्य शैलियों का समन्वय करके एक नई क्लासिकल शैली, शास्त्रीय शैली विकसित की गई। इस शैली में सजावट और आकृत्ति को विशेष महत्त्व दिया जाता था। इस नवीन शैली की मुख्य विशेषताएँ थी

i. श्रृंगार, सज्जा, डिजाइन ii. विशालता और भव्यता

iii. सौन्दर्यता, फूल–पत्तियाँ आदि।

3. डोरिक, आयोनिक कोरिन्थ्यन शैली : पुनर्जागरण काल में डोरिक, आयोनिक और कोरिन्थ्यन शैली के शीर्ष भागों का उपयोग चर्च तथा सार्वजनिक भवनों में किया जाने लगा। इस नवीन शैली की शुरूआत भी इटली से हुई थी और बाद में यूरोप के अन्य देशों में इसका प्रसार हुआ था। फ्लोरेंस के लोरेन्जो द मेडिसी ने इस नवीन शैली को संरक्षण प्रदान किया।

4. फ्लोरेंस शैली : फ्लोरेंस शहर में निवारसत चित्रकारों की वजह से यह नाम पड़ा।

5. उम्ब्रीयन शैली : इस शैली का प्रमुख चित्रकार पीएट्रोपेरूजिनो (1446-1524) सर्वाधिक विख्यात है।

6. वेनेशियन शैली: इस शैली का प्रमुख चित्रकार टिटियन (1477-1576) प्रमुख माना जाता है।

7. शान्तो : फ्रंस के 'जुआर प्रांत' में सामंतों के निवास।

प्रमुख वास्तुकार

- ब्रूनेलेस्की
- माइकल एजेंलो
- राफेल
- पालदियोन

वास्तुकला के प्रमुख उदाहरण	
1.	फ्लोरेंस के गिरिजाघर का विशाल गुम्बद फिलियो ब्रूनेलेस्की की कृति है।
2.	रोम में क्लासिकल शैली में निर्मित संत पीटर का नया गिरजाघर है।
3.	पेरिस का लूब्रे का प्रासाद
4.	लंदन संत पाल का गिरिजाघर
5.	वेनिस का संत मार्क का गिरिजाघर
6.	जर्मनी में हेण्डेल वर्ग का दुर्ग।
7.	स्पेन के 'इस्कोरियल प्रासाद'

❖ **मूर्तिकला :** स्थापत्य तथा मूर्तिकला का विकास समवेत रूप से हुआ। इस काल में 'लोरेंजो गिवेर्ती' (1378-1455 ई), 'दोनातेल्लो' (1386-1466 ई.) और माइकेल एंजेलो जैसे महान् मूर्तिकार हुए। इन्होंने केवल 'ईसा' या 'मरियम' की ही नहीं, वरन् समकालीन प्रमुख व्यक्तियों की भी मूर्तियाँ बनाई। इस युग का मूर्तिकार जितना 'शौर्य' को मूर्त रूप देने में सक्षम था, उतना ही करुणा को। इस काल में 'मूर्तिकला' भी अन्य कलाओं की तरह धर्म के बंधन से मुक्त थी। इटली की मूर्तिकला से इंग्लैण्ड, जर्मनी, फ्रांस और स्पेन की कला भी प्रभावित हुई। स्पेन में 'ईसाबेला' और सम्राट् फर्डिनेंड की समाधियों में नई शैली के दर्शन होते हैं। इंग्लैण्ड में 'हेनरी सप्तम्' और 'फ्रांसिस प्रथम' ने इस शैली को विकसित किया। दोनों शासकों ने अपने-अपने देशों में इटली के मूर्तिकारों को आमंत्रित किया। धीरे-धीरे सम्पूर्ण पश्चिमी यूरोप में मूर्तिकला की नवीन शैली का प्रसार हो गया।

- **गिर्बेर्ती**-'गिबेर्ती' एक महान् मूर्तिकार था। उसने 'फ्लोरेंस के गिरजाघर' के लिए सुन्दर दरवाजों का निर्माण किया। ये दरवाजे 'काँसे' के बने हुए हैं और इन पर प्राचीन 'टेस्टामेंट' में वर्णित दृश्यों का अंकन किया गया है। माइकेल एंजेलो ने इनकी प्रशंसा करते हुए कहा कि "ये स्वर्ग में रखे जाने योग्य हैं।" वास्तुशिल्प के क्षेत्र में पुनर्जागरण ने 'वास्तुविद' (आर्किटेक्ट) के रूप में एक नये कलावन्त को जन्म दिया। उसका काम था-भवनों का डिजाइन तैयार करना। उस युग के भवनों में यूनानी स्तम्भों, अंलंकार युक्त शिलापटों, रोमन मेहराबों और गुम्बदों का अधिक प्रयोग किया जाता था।
- **दोनातेल्लो**-'दोनातेल्लो' के द्वारा निर्मित मूर्तियों का विषय 'मानव जीवन' था। दोनातेल्लो द्वारा निर्मित वेनिस की 'सेन्ट मार्क' की आदमकद मूर्ति श्रेष्ठ कलाकृति मानी जाती है। दोनातेल्लो ने बच्चों की अनेक सहज मूर्तियाँ बनाई।
- **लूकाडेला रोबियो**- चिकनी मिट्टी की सुंदर मूर्तियाँ बनाई।

- **एंजेलो**-इनके द्वारा अनेक सुन्दर मूर्तियों का निर्माण किया गया। उसकी बनाई गई मूर्तियाँ 'मेडिची के गिरजाघर' में रखी गयीं।

एंजेलो के द्वारा बनाई गई प्रसिद्ध मूर्तियाँ		
1.	पेता की मूर्ति	इसकी ऊँचाई 16 फीट है। इससका निर्माण रोम में किया गया था और उसे सेंट पीटर के गिरजाघर के मुख्य द्वार पर रखा गया।
2.	डेविड की मूर्ति	इसे फ्लोरेंस के नागरिकों ने बनवाया था। उसने डेविड को वीर पुरुष के रूप में, तो प्रस्तुत किया ही, साथ ही उसके व्यक्तित्व में कोमलता की भी प्रस्तुति की।
3.	पोप जुलियस द्वितीय का मकबरा	माइकल एंजेलो और उनके सहायकों द्वारा बनाया गया। इसे 1505 में बनाया गया था।

संगीतकला

- पुनर्जागरण काल में संगीत के क्षेत्र में पर्याप्त उन्नति हुई, जिसका मुख्य कारण यह था कि मध्यकाल में गिरजाघरों में संगीत वर्जित था किन्तु बाद में ऐसा न रहा। मार्टिन लूथर ने अपना धर्म यूरोप में चलाया, तो नवीन धर्म में 'गीतों' का प्रादुर्भाव हुआ। स्वयं 'लूथर' ने धार्मिक तथा अन्य कुछ गीतों का संकलन किया। 16वीं शताब्दी में संगीत में स्वर, ताल आदि के विषय में नए ढंग से विचार किया और उसे लोकप्रिय बनाने की चेष्टा की। संगीत में 'लौकिक संगीत' का महत्त्व बढ़ा। 16वीं शताब्दी में 'लौकिक मनोरंजन' के रूप में 'वाद्यसंगीत' बहुत लोकप्रिय हो गया।

विशेषताएँ:-

1. मध्यकाल में धर्म द्वारा संगीत प्रतिबद्ध था। पुनर्जागरण के प्रभाव से धार्मिक तथा लौकिक संगीत का भेदभाव समाप्त हो गया। मध्यकालीन वाद्ययंत्रों के स्थान पर नये-नये वाद्ययंत्रों का निर्माण किया गया जिनमें हार्प्सीकार्ड, वायलिन, पियानो मुख्य थे।
2. अब स्वच्छंद रूप से संगीत की विचारधारा प्रस्तुत हुई। वाद्य संगीत में लोग रूचि लेने लगे। एक का नाम था 'औरतोरिये' (परिकीर्तन) और दूसरे का नाम था 'ओपेरा'।
3. औरतोरिये का विषय विशुद्ध धार्मिक होता था और उसमें कार्यव्यापार, वेशभूषा तथा दृश्यावली का प्रयोग नहीं किया जाता था। ओपेरा आमतौर पर सांसारिक विषयों से संबंधित होता था। इसमें अभिनय, वेशभूषा, गायन दृश्यावली आदि का उपयोग किया जाता था।

प्रमुख संगीतशास्त्री		
क्र.सं.	**संगीतशास्त्री**	**विशेष**
1.	**गिओवानी पालेस्टाइना**	यह **इटली का प्रसिद्ध गायक** था।
		इसने 1554 ई. में **'सामूहिक संगीत'** पर अपनी **रचना प्रकाशित** कराई। पालेस्टाइना अत्यन्त ही लोकप्रिय सिद्ध हुआ।
		पोप ने उसके द्वारा **गिरजाघरों की प्रार्थना के लिए तैयार 'स्वर लिपि' को स्वीकृति** प्रदान की।
2.	**मास्किनदस**	स्वर व ताल के बारे में नवीन शैली को जन्म दिया।

विज्ञान के क्षेत्र में पुनर्जागरण का प्रभाव

- पुनर्जागरण काल में विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई। अंग्रेज 'फ्रांसिस बेकन' (1561 1626 ई.) ने इस काल के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का वर्णन करते हुए लिखा है, "ज्ञान की प्राप्ति केवल प्रेक्षण और प्रयोग करने से ही हो सकती है।"

विशेषताएँ :-

1. मध्ययुगीन लोग यह समझते थे कि पृथ्वी चपटी है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा नहीं कर सकते। उनके जीवन पर धर्म और चर्च का जबरदस्त प्रभाव था और मानव जीवन पूरी तरह अंधकारमय था। उनका मुख्य ध्येय जीवनभर परलोक को ही सुधारना था। इस दृष्टिकोण को अपनाकर चलने वाले लोगों की इस संसार की खोजबीन में अधिक रूचि नहीं थी।
2. पुनर्जागरण की भावना ने किसी भी सिद्धान्त को स्वीकार करने के पहले उसके विषय मे निरीक्षण, अन्वेषण, जाँच और परीक्षण करने पर जोर दिया।
3. नये आविष्कारों और खोजों का मार्ग प्रशस्त हुआ और कालान्तर में इतने अधिक परिवर्तन हुए कि लोग इस स्थिति को 'वैज्ञानिक क्रान्ति' के नाम से पुकारने लगे। पुनर्जागरण के बाद भूगोलवेताओं ने पूरे विश्व की यात्रा आसान कर दी।
4. मानववादी विचारधारा ने ही मनुष्य को प्रकृति के रहस्यों की खोज करने की प्रेरणा दी थी।

प्रमुख वैज्ञानिक

- **ज्योतिषशास्त्र**
  - टॉलेमी
  - कॉपरनिक्स
  - कैप्लर
  - बूनो
  - गैलीलियो
  - न्यूटन
- **गणित शास्त्र**
  - देकार्ते
  - तारतगेलियो
  - कैप्लर
  - नेपियर
  - राबर्ट ब्राइस
  - स्टविन
- **रसायन शास्त्र**
  - कोडेस
  - वॉल हेलमाट
  - पैरासेल्सेस
  - रोजन बेकन
- **भौतिक शास्त्र**
  - गैलीलियो
  - गिलबर्ट
  - रोन बेकन
- **चिकित्सा शास्त्र**
  - पेसेडियम
  - वियिलम हार्वे

ज्योतिषशास्त्र का प्रभाव

वैज्ञानिक	देश	समय	विशेष
टालमी	मिस्र		'जियोसेन्ट्रिक सिद्धान्त' का प्रतिपादन। ''पृथ्वी ब्रह्माण्ड के केन्द्र में स्थित है तथा सूर्य, तारे एवं ग्रह इसकी परिक्रमा करते हैं।''
कोपर्निकस	पोलैण्ड	1473-1543 ई.	इसने टॉलमी के 'जियोसेन्ट्रिक सिद्धान्त' को असत्य सिद्ध किया और कहा, ''पृथ्वी एक उपग्रह है तथा यह सूर्य के चारों ओर घूमती है।''
जाइडिनी बूर्नो	इटली	1548-1600 ई.	'कोपर्निकस के सिद्धान्त' का अनुमोदन एवं प्रसार किया। पोप के आदेश से प्राण दण्ड मिला।
जॉन कैपलर	जर्मन	1571-1630 ई.	इसने 'कोपर्निकस के सिद्धान्तों' की गणित के प्रमाणों से पुष्टि की। इसने बताया कि ''ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं और उनका पथ वर्तुल नहीं अपितु दीर्घवृत्तीय होता है।''
गैलीलियो	इटली	1564-1642 ई.	इन्होंने एक दूरबीन (टेलिस्कोप) बनायी एवं सूर्य, तारों और ग्रहों को देखा। ''गिरते हुए पिण्डों की गति उनके भार पर नहीं, अपितु दूरी पर निर्भर करती है, जहाँ से वे गिरती हैं।'' इससे अरस्तु का सिद्धान्त गलत प्रमाणित हो गया।
आइजक न्यूटन	इंग्लैण्ड	1642-1727 ई.	ये कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में गणित का प्रोफेसर थे। 'गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त' प्रतिपादित किया। ''प्रत्येक वस्तु पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के कारण ऊपर से पृथ्वी की ओर खिंचती है।'' पुस्तक-प्रिंसिपिया प्राकृतिक दर्शन के गणित संबंधी सिद्धान्त।

चिकित्सा शास्त्र का प्रभाव	
पेसेडियम	1543 ई. में नीदरलैण्ड में **'मानव शरीर की बनावट'** नामक पुस्तक लिखी।
विलियम हार्वे	इंग्लैण्ड (1579-1657) ने पता लगाया कि हृदय रद्र को धमनियों के द्वारा सारे शरीर में फेंकता है और शिराओं द्वारा वापस लेता है। इस खोज के कारण ही रक्त चढ़ाने तथा हृदय और ग्रन्थियों के रोगों की चिकित्सा संभव हो पायी।
रसायन शास्त्र का प्रभाव	
कोडेस	गन्धक ओर अल्कोहॉल को मिलाकर ईथर का निर्माण किया।
वॉल हेलमाट	इसने 1630 ई. में कार्बनडाइऑक्साइड नामक गैस को बनाने की खोज की।
पैरासेल्सेस	रसायन व चिकित्साशास्त्र के बीच निकट संबंध बताया।
रोजन बेकन	साधारण सूक्ष्मदर्शी का निर्माण किया।
भौतिक शास्त्र का प्रभाव	
गैलीलियो	पेण्डुलम के आधार पर आधुनिक घड़ियों का निर्माण किया।
गिलबर्ट	मैग्नेटिक संबंधित सिद्धान्त का आविष्कार किया जिससे बिजली का आविष्कार हुआ।
गणितशास्त्र का प्रभाव	
देकार्ते	एक फ्रांसीसी गणितज्ञ और दार्शनिक था, विज्ञान के क्षेत्र में उसने सन्देह और तर्क पर बल दिया और रूढ़िवादी लोगों को अपना शत्रु बना लिया। उसकी सबसे बड़ी खोज थी कि बीजगणित का उपयोग ज्यामिति में कैसे किया जाता है।
तारतगेलियों	गणित के क्षेत्र में घन व समीकरण के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।
केप्लर	**शंकु सम्बन्धी नियमों** की खोज की।
नेपियर	दशमलव पद्धति पर काम किया।
राबर्ट ब्राइस	गैसों के विस्तार क्षेत्र में नये सिद्धान्त प्रतिपादित कियें।
स्टेविन	दशमलव प्रणाली का प्रचार किया।

राजनीतिक चिंतक के क्षेत्र में विकास

पुनर्जागरण काल के प्रमुख राजनीतिक चिंतक		
क्र.सं.	**चिंतक**	**प्रसिद्ध पुस्तक**
1.	दांते	द मोनार्किया
2.	मार्सिग्लियो	डिफेन्डर ऑफ पीस
3.	मैकियावेली	द प्रिंस
4.	हॉब्स	

- **दांते** – राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में 'दांते' का नाम सबसे पहले लिया जाता है। दांते ने अपनी कृति 'द मोनार्किया' में यह बताया कि 'अधार्मिक विषयों में राजशक्ति ही सर्वोच्च होनी चाहिए।'
- **मार्सिग्लियो** – इसने अपनी कृति 'डिफेन्डर ऑफ पीस' में पोप के राजनीतिक हस्तक्षेप को अनुचित बताया है। उसने 'बाइबिल' के उदाहरण देकर सिद्ध किया कि ''पोप को कभी राजनीतिक अधिकार नहीं दिया गया।' उसने उस दस्तावेज की भी आलोचना की, जिसमें 'कॉन्टेस्टाइन' ने पोप 'सिल्वेस्टर' को राजनीतिक शक्ति प्रदान की थी। मार्सिग्लियो पहला व्यक्ति था, जिसने यथार्थ में इस तथ्य में संशय प्रकट किया। मार्सिग्लियो एक 'आधुनिक चिन्तक' था, उसने राजतन्त्र के पीछे भी प्रजा की शक्ति की वकालत की। उसके अनुसार, राजा के चुनाव में पोप का हस्तक्षेप अनुचित है। वह मानता था कि ''राज्य की शक्ति का स्रोत वहाँ के निवासी हैं।'' इस प्रकार वह 'जनसत्ता' का पहला समर्थक था।
- **मैकियावेली**–यह फ्लोरेंस का निवासी था और वहाँ के कई राजाओं का सचिव रह चुका था। उसकी कृतियों में 'द प्रिंस' सबसे प्रसिद्ध है। मैकियावेली का चिन्तन धर्म से परे था। मैकियावेली पुनर्जागरण युग का पहला लेखक था जिसने स्पष्ट शब्दों में राज्य के धर्मनिरपेक्षीकरण की बात कही। उसे विश्वास था कि 'धर्म ने राज्यों को निर्बल बनाया है।' पोप और ईसाई पादरियों ने मैकियावेली की कटु शब्दों में आलोचना की। इसे **'आधुनिक चाणक्य'** कहा जाता है।

  उसका दृष्टिकोण **'यथार्थवादी'** था तथा साध्य के लिए किसी भी साधन की उपयुक्तता के सिद्धान्त पर आधारित था।
- **हॉब्स**–पुनर्जागरण काल का ही एक अन्य प्रमुख राजनीतिक चिन्तक इंग्लैण्ड का **'हॉब्स'** था।

पुनर्जागरण का राजनैतिक प्रभाव व महत्व			
1.	मध्यमवर्ग का उदय	7.	वैज्ञानिक दृष्टिककोण
2.	सामंतवाद का पतन	8.	भौगोलिक खोजों की शुरूआत
3.	चर्च का वर्चस्व समाप्त हो गया।	9.	धर्म सुधार की पृष्ठभूमि का निर्माण
4.	क्षेत्रीय भाषाओं का विकास हुआ।	10.	पूंजीवाद का विकास
5.	राष्ट्रीय राज्यों का उदय हुआ।	11.	प्रबोधन युग की शुरूआत
6.	भौतिकवादी दृष्टिकोण का विकास हुआ।	12.	औद्योगिक क्रांति की पृष्ठभूमि

पुनर्जागरणकालीन प्रमुख भौगोलिक खोजें

- पुर्तगाल और स्पेन ने सबसे पहले भौगोलिक खोजों में रूचि जाग्रत की। यहाँ के शासक साहसी समुद्री यात्रियों के संरक्षक थे। 1415 में अफ्रीका के तटीय प्रदेश 'सीटा' पर पुतर्गाल ने अधिकार किया था और 'अजोर्स मदिरा' द्वीप समूहों की खोज की।

1. पुर्तगाली नाविक बार्थोलोम्युडियाज ने 1486 में अफ्रीका के चक्कर लगाकर उत्तमाशा अंतरीप की खोज की।
2. कोलम्बस ने 1492 में अमेरिका महाद्वीप की खोज की, जबकि मार्ग तो भारत का खोजना था। कोलम्बस, तीन जहाज, 88 नाविकों के साथ 75 दिन की यात्र के बाद बहामा द्वीप समूह में पहुँचा। वहाँ के निवासियों को रेड इंडियन की संज्ञा दी। इसी की प्रेरणा लेकर इटली निवासी अमेरिगो वेपुस्की ने इस नई दुनिया की यात्र की और दक्षिणी अमेरिका की खोज की।
3. 1498 में पुर्तगाली नाविक वास्को-डि-गामा उत्तमाशा अंतरीप से होते हुए भारत के कालीकट बंदरगाह तक पहुँचा (प्रथम व्यक्ति जिसने भारत के जलमार्ग की खोज की)।
4. पुर्तगाल निवासी फर्नाडो मेगेलन 1514 में समुद्री मार्ग से प्रशांत महासागर को पार करता हुआ फिलिपींस द्वीप पहुँचा और सारी पृथ्वी का चक्कर लगा आया। यह इतिहास में पृथ्वी की जलयान द्वारा की गयी पहली यात्र थी।
5. इंग्लैण्ड का साहसी यात्री ड्रेक ने 1570 से 1580 तक पृथ्वी की परिक्रमा कर डाली।
6. पुर्तगाली नाविक कैबरल ने ब्राजील की खोज की।
7. फ्रांसीसी नाविक जेक कर्टियर ने 1534 में कनाडा का पता लगाया।

- उक्त खोजों के बाद पुर्तगाल स्पेन फ्रांस, इंग्लैण्ड, इटली दुनिया की खोज में लग गए और सब जगह पर इन्होंने अपने उपनिवेश स्थापित कर लिये।

भौगोलिक खोजों के परिणाम		
क्र.सं.	लाभ	हानि
1.	अंधविश्वास समाप्त, ज्ञान-विज्ञान का विकास हुआ।	उपनिवेशवाद की स्थापना।
2.	व्यापार-वाणिज्य की उन्नति हुई व पूंजीवाद बढ़ा।	दास-प्रथा की शुरूआत।
3.	ईसाई धार्म और पाश्चात्य सभ्यता का प्रसार हुआ।	साम्राज्यवाद की स्थापना।
4.	बैंकों की स्थापना हुई।	भौतिकवाद ने प्रतिस्पर्धा, संघर्ष व युद्ध को जन्म दिया।

पुनर्जागरण का महत्त्व एवं परिणाम

- पुनर्जागरण ने प्राचीन प्रेरणाओं पर आधारित एक ऐसा प्रयोग प्रारम्भ किया, जो उस युग की परिस्थितियों से सामंजस्य भी कर सका, साथ ही नितांत मौलिक एवं प्रगतिशील दिशाएँ भी तलाश सका।

पुनर्जागरण का महत्त्व एवं परिणाम			
1.	अभिव्यक्ति की प्रतिष्ठा	4.	राष्ट्रीयता का विकास
2.	भौतिकवादी दृष्टिकोण का विकास	5.	पुरातन के प्रति मोह जागृत करना
3.	बुद्धिवादी दृष्टिकोण का विकास		

1. **अभिव्यक्ति की प्रतिष्ठा :** पुनर्जागरण ने 'अभिव्यक्ति' की भावना की प्रतिष्ठा की। इसका अर्थ है कि अब केवल लोगों को न तो निःस्तब्ध भाव से बातों को सुनते ही जाना संतुष्टि प्रदान कर सकता था और न सम्राट अथवा पोप का। उन्हें यह आदेश देना ही कि आप अमुक कार्य को अमुक पद्धति से करें अथवा अमुक प्रकार से सोचें। वे लोग जीवन के रंगमंच पर आकर स्वयं कोई न कोई अभिनय करना और व्यक्तिगत तौर पर अपने-अपने विचारों को किसी न किसी भाँति 'अभिव्यक्त' करना चाहते थे।

2. **भौतिकवादी दृष्टिकोण का विकास :** पुनर्जागरण ने 'मनुष्य' को उसकी महत्ता से अवगत कराया। पुनर्जागरण मूलतः मध्यकाल के ईश्वर केन्द्रित सभ्यता से आधुनिक युग के मानव केन्द्रित सभ्यता की ओर एक परिवर्तन था। लोगों ने समझा, जीने में अपने आप में ही एक विशेष प्रकार का सुख है, जिसका 'परलोक' के नाम पर त्याग करना उचित नहीं है। पुनर्जागरण के अधिकांश विद्वानों एवं वैज्ञानिकों ने मानव संसार को अधिक सुन्दर एवं समृद्ध बनाने की शिक्षा दी, जिससे 'भौतिकवादी दृष्टिकोण' का विकास हुआ।

3. **बुद्धिवादी दृष्टिकोण का विकास:** पुनर्जागरण ने 'तर्क' और 'विवेक' को प्रतिष्ठापित किया तथा पुरानी धार्मिक विचारधारा तथा परम्पराओं पर कठोर आघात किया। 'विचार स्वातन्त्र्य' को 'पुनर्जागरण का आधार स्तम्भ' माना जाता है। इस युग में अनेक ऐसे व्यक्ति हुए, जो अपने स्वतंत्र विचारों के लिए मर मिटने को तैयार रहते थे। उस युग के 'मानव मस्तिष्क' पर धर्म का जो विशेष प्रभाव था, उसे पुनर्जागरण ने दूर किया तथा निकट भविष्य में होने वाले धर्म सुधारों की पूर्व पीठिका तैयार की।

- पुनर्जागरण काल की नई खोजों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किक विवेचना ने धर्म ग्रन्थों के सिद्धान्तों और धार्मिक विश्वासों को हिला दिया। यह वह युग नहीं था, जब लोग अपने सम्पूर्ण विचारों और कृत्यों को आगामी अलौकिक जीवन के प्रति समर्पित कर देते थे। अब लोगों में इस प्रकार की धारणा जागृत हो गई थी कि ''स्वर्ग को हम इस धरा पर ही लाकर क्यों न संस्थापित कर दें?'' वास्तविकता यह है कि उन्हें इस दृष्टिकोण में अपूर्व सफलता भी प्राप्त हुई।

4. **राष्ट्रीयता का विकास :** पुनर्जागरण काल में चर्च और राज्य के बीच पृथकता की कल्पना की गयी। पुनर्जागरण के बाद न केवल कैथोलिक चर्च का एकाधिकार खत्म हुआ और सरल सम्प्रदायों का जन्म हुआ बल्कि निकट भविष्य में राज्य और धर्म के बीच एक स्पष्ट विभाजक रेखा अंकित हुई। धर्म और पोप की सत्ता के प्रभाव में कमी आने से लोगों में 'राष्ट्रीयता की भावना' का विकास हुआ। राष्ट्रीयता की भावना ने लोगों में अपने-अपने राष्ट्र की प्रगति और शक्ति के विकास में रुचि बढ़ायी। देशीय भाषाओं की उन्नति के कारण इस प्रक्रिया में बड़ी सहायता मिली। राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना होने लगी, जिससे राष्ट्र को महत्त्व मिलने लगा। मैकियावेली के 'राष्ट्र सम्बन्धी' विचारों ने राष्ट्र शक्ति को बढ़ाने में सहायता पहुँचायी। यह स्मरण रहे कि ''पुनर्जागरण कालीन सभी प्रवृत्तियाँ नूतन न थीं।''

- विद्वान् इतिहासकार बर्नस ने भी लिखा है कि ''यह स्पष्ट हो गया कि रिनेसां के नाम से विख्यात क्रान्ति अतीत की विशिष्ट प्रतिध्वनि तथा भविष्य की अग्रदूत थी। इसके अधिकांश साहित्य, कला तथा दर्शनशास्त्र और समस्त अन्धविश्वासों की जड़ें श्रेष्ठ प्राचीन अथवा मध्ययुग की काल्पनिक शताब्दियों में निहित थीं। इसके मानववाद की अतीत के प्रति निष्ठा थी । केवल विज्ञान और राजनीतिक के क्षेत्र में तथा व्यक्ति द्वारा स्वयं की स्वतंत्रता तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए समुचित अधिकारों के सक्रिय प्रयास ही नवीन थे।'' अंत में यह कहा जा सकता है कि ''पुनर्जागरण ने जिन प्रवृत्तियों की शुरुआत की तथा जिन्हें संस्थापित किया, वे आगे आने वाले समय का आधार बनीं।''

5. **पुरातन के प्रति मोह जागृत करना :** पुनर्जागरण से पूर्व लोगों को पुरातन ज्ञान में कोई अभिरुचि नहीं थी। इटलीवासी अपने प्राचीन स्मारकों को विस्मृत कर चुके थे। परन्तु इस आन्दोलन ने उनका ध्यान इन स्मारकों की ओर आकृष्ट किया। 15वीं सदी में प्लेमियो विओडो ने 'रोम रेस्टोर्ड' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ लिखा। इस ग्रंथ से पूर्व 'रियेन्जी' ने रोम की भव्यता पर एक पुस्तक लिखी थी, परन्तु प्लेमियो की पुस्तक ऐतिहासिक दृष्टिकोण से लिखी गयी थी। अतः इससे इतिहास की एक सर्वथा नवीन शाखा का जन्म हुआ, जिससे आगे चलकर प्राचीन विश्व सभ्यता के अनेक अज्ञात ऐतिहासिक तथ्यों से आवरण हट सका।

***